ॐ **श्री गणेशाय नमः**

Horoscope of **Prasad**
Jathakam.org

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पत्रिका

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक प्रक्रिया की अनुगम के लिए
यह जन्मकुण्डली लिखा गया है

नाम : Prasad [पुरुष]

सप्ताह के दिन में। : शुक्रवार

शुक्रवार में जन्म लेने के कारण आपको सफेद और ललति रंग के वस्त्रों और चीजों से अभिरुचि होगा । भूसंम्पति और खेंती से आपको प्राकृतिक आकषर्ण होगा । दुसरों के दुःख को समझकर उसमें शमिल होने के लिए आप तैयार होगों ।

जन्म नक्षत्र : स्वाति

आपका जन्म नक्षत्र स्वाति है। कुशलता पूर्ण पुरुषार्थ से जीवन में उन्नति अवश्य प्राप्त होगा। विरोध और टीका टिप्पनी आपको कतई पसंद नहीं है। विरोध को सह पाना आपके लिए असंभव नहीं तो कठिन अवश्य होगा। विरोधियों से टकराना, उन्हें अपमानित करना आपके लिए सामान्य सी बात होगा। विधार्थी जीवन में कुछ लांछ न लगने की संभावना है। लोगों को परामर्श देना आपके लिए सामान्य बात होगा। प्रियजनों के लिए सीमा से अधिक त्याग करने को सदा तैयार रहेंगे। शुद्ध हृदय और सशक्त मनोबल से आपमें स्पष्ट वादिता सदा बनी रहेगी। एक अच्छे पति के गुणों से सदा युक्त रहेंगे। जीवन साथी के प्रति सदा सहायक, प्रियकर और इमानदार बने रहेंगे। व्यवहार, मधुर वाणी, स्पष्ट वादिता और हंसी युक्त हाव भाव के कारण कुछ लोग आपको गलत समझ सकते हैं। धर्म के प्रति आस्था, व्यवहार में नम्रता, व्यवसाय में निपुणता, प्यार में समर्पण और सांसारिक ज्ञान में सूक्ष्मता रहेगी। विधा प्राप्ति में अधिक परिश्रम करनेवाले होंगे। काम कला में पारंगता प्राप्त है। समाज व राज से मान्यता प्राप्त होगा। निडरता के कारण आपकागणना वीरों में होग । सच्चाई और कर्म के कारण सहयोगी आदर देंगे। क्रोधावेग में हानि की संभावना है। आयु के साथ-साथ शरीर, प्रतिष्ठा, पद, धन आदि में पुष्टता आती रहेगी। स्वप्नदर्शी व भाग्यशाली है।

पेट और नाभी से नीचे वाले भाग में रोगादि होने की संभावना रहेगी। अपरिचित विपरीत योनि से संपर्क हानिकारक हो सकता है। 'विदग्धो धार्मिकचैव' कृपणः प्रियवल्लभः। सुखी च देवभक्तच स्वात्यां जातो भवेन्तरः।।'

तिथि : षष्ठि

आप का जन्म षष्ठी तिथि में हुआ है। आपको अपने क्रोध और भावों को नियन्त्रित करने की आवश्यकता है। अनेक मित्रजन जो आप से संबन्ध रखते हैं वे अपना मन आप के सामने खुला करने में झिझकते हैं। सामान्यतः आप अमीर तथा तंदुरुस्त रहेंगे। आप सत्य प्रतिज्ञ, विख्यात, यशस्वी, पराक्रमी और चतुर होंगे। देह के किसी भाग में वर्ण का चिन्ह होना संभव होगा।

करण : गाय

क्योंकि आपने वनिजा करना में जन्म लिया है आप कला का मूल्याँकन करेंगों । आप अपने चातुर्य गुणें का इस्तेमाल करेगों । अपने स्वास्थ्य से सचेत है और जल्दी ही बिना किसी कारण परेशनित होगो । आप काल्पनिक और भावुक है ।

नित्ययोग : वृध्धि

आप का जन्म वृद्धि नित्ययोग में हुआ है। आपकी बुद्धि तेज़ है और सभी कार्यों को सूक्ष्मरूप से समझने की शक्ति उपलब्ध है। बचपन में आपको जो अवसर प्राप्त हुए और जो परिस्थिति प्राप्त हुई उसके अनुसार आपका भविष्य निर्माण होगा। अपना परिवार ही आपकी संपत्ति होगी। इस कारण सुरक्षित और सुखमय भविष्य के निर्माण के लिए बचपन से ही परिश्रम करना लाभदायी हो सकता है। अतः व्यापार से ही धनी बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

नाम	: Prasad
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 20 फेब्रुवरी, 1976 शुक्रवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 11:05:00 AM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 08:00 ग्रीनवीच रेखा के पश्चिम
जन्म स्थल	: California
रेखांश & अक्षांश (Deg.Mins)	: 119.45 पश्चिम , 37.15 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष = 23 डिग्रि. 31 मिनिट. 39 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: **स्वाति** - 4
जन्म राशी - राशी का देव	: **तुला** - शुक्र
लग्न - लग्न का देव	: वृषभ - शुक्र
तिथि	: षष्ठि, कृष्णपक्ष

सूर्योदय	: 06:43 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 05:43 PM " "
दिनामान (Hrs. Mins)	: 11.0
दिनामान (Nazhika.Vinazhika)	: 27.30
प्रादेशिक समय	: Standard Time + 1 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: शुक्रवार
कलिदिना	: 1854363
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन

नक्षत्र का देव	: राहु
गणम्, योनी, जानवर	: देव, पुरुष, भैंस
पक्षी, पेड	: कौआ, आसन
चन्द्र अवस्था	: 10 / 12
चन्द्र वेला	: 30 / 36
चन्द्र क्रिया	: 50 / 60
ठगड़ा राशी	: मेष,सिंह
करण	: गाय
नित्ययोग	: वृध्धि
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: कुंम्भ - शताभिषा
अनगदित्य का स्था	: हाथ
Zodiac sign (Western System)	: Pisces

योगी पोयन्ट् - योगी नक्षत्र	: 238:48:3 - ज्येष्ठ
योगी गृह	: बुध
द्वगुणति योगी	: मंगल
अवयोगी नक्षत्र - गृह	: धनिष्ठ - मंगल
आत्म करक - करकांसा	: गुरु - मीन
अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	: मंगल
लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	: कन्या

धन अरुढ़ा : सिंह

गृहों का रेखांश

गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का राशी - मीन

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	65:26:4	गुरु	22:36:6
चन्द्र	221:14:42	शनि	117:10:12 रितु
रवि	331:16:39	युरेनस	217:5:56 रितु
बुध	305:22:12	नेप्टयून	253:48:30
शुक्र	301:20:47	प्लूटो	191:19:32 रितु
मंगल	79:54:11	नोड	226:34:40

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष = 23डिग्रि.31 मिनिट.38 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	41:54:25	वृषभ	11:54:25	रोहिणी	1
चन्द्र	197:43:3	तुला	17:43:3	स्वाति	4
रवि	307:45:0	कुंम्भ	7:45:0	शताभिषा	1
बुध	281:50:33	मकर	11:50:33	श्रावण	1
शुक्र	277:49:8	मकर	7:49:8	उत्तरषाढा	4
मंगल	56:22:33	वृषभ	26:22:33	मृगशिरा	1
गुरु	359:4:27	मीन	29:4:27	रेवत्ति	4
शनि	93:38:33	कर्क	3:38:33रितु	पुष्य	1
राहु	203:3:1	तुला	23:3:1	विशखा	1
केतु	23:3:1	मेष	23:3:1	भरणी	3
गुलिक	358:29:58	मीन	28:29:58	रेवत्ति	4

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	रोहिणी	चन्द्र	राहु	राहु
चन्द्र	स्वाति	राहु	रवि	गुरु
रवि	शताभिषा	राहु	राहु	बुध
बुध	श्रावण	चन्द्र	मंगल	चन्द्र
शुक्र	उत्तरषाढा	रवि	शुक्र	शुक्र
मंगल	मृगशिरा	मंगल	गुरु	शनि
गुरु	रेवत्ति	बुध	शनि	रवि
शनि	पुष्य	शनि	शनि	शनि
राहु	विशखा	गुरु	शनि	चन्द्र
केतु	भरणी	शुक्र	शनि	रवि
गुलिक	रेवत्ति	बुध	शनि	बुध

निरायन संक्षिप्त (डिग्रि. मिनिट. सेकेन्ड.)

गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	वृषभ	11:54:25	रोहिणी / 1	गुरु	मीन	29:4:27	रेवत्ति / 4
चन्द्र	तुला	17:43:3	स्वाति / 4	शनि	कर्क	3:38:33R	पुष्य / 1
रवि	कुंम्भ	7:45:0	शताभिषा / 1	राहु	तुला	23:3:1	विशखा / 1
बुध	मकर	11:50:33	श्रावण / 1	केतु	मेष	23:3:1	भरणी / 3
शुक्र	मकर	7:49:8	उत्तरषाढा / 4	गुलिक	मीन	28:29:58	रेवत्ति / 4
मंगल	वृषभ	26:22:33	मृगशिरा / 1				

राशी

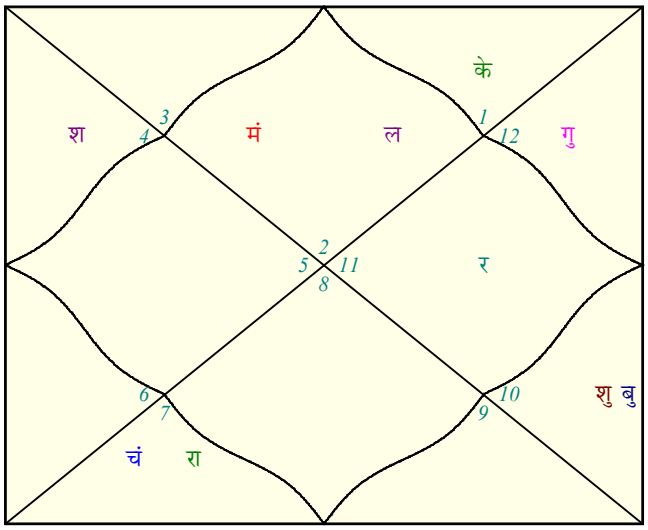

नवांश

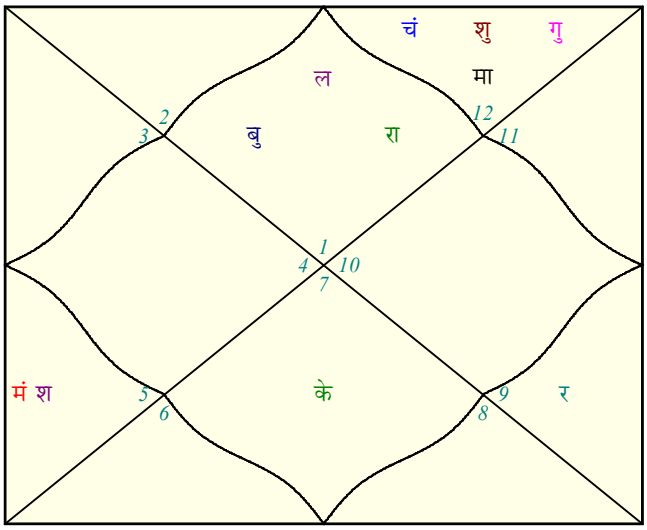

जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 3 साल, 0 महीने, 29 दिन

विशिष्ट राशी चक्र

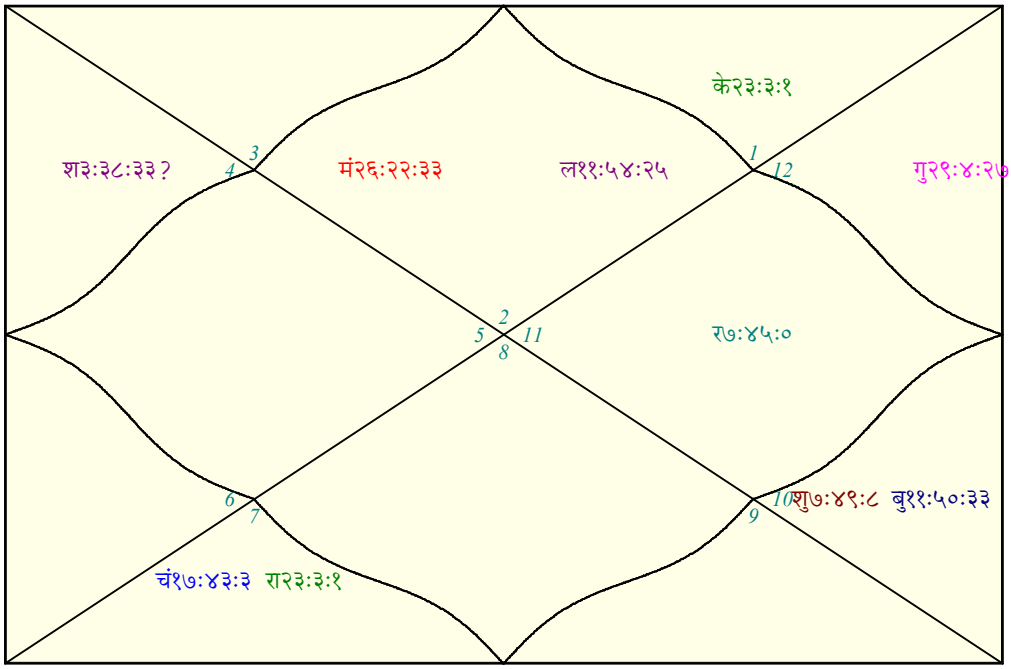

? विपरीत परिस्थिती **)** श्रेष्ट समय **(** क्षीण परिस्थिती **;** सयहोग

नवांश: चं::मीन र::धनु बु::मेष शु::मीन मं::सिंह
गु::मीन श::सिंह रा::मेष के::तुला ल::मेष मा::मीन

भाव कुंडली

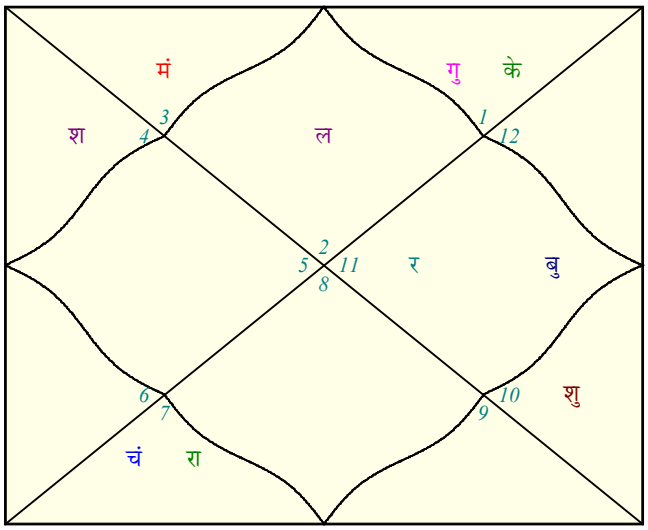

भाव टेबुल

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	मध्य (मध्य) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	अन्तिम (अंत) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	गृहों भाव में उपस्थित है
1	23:18:54	41:54:25	53:18:54	
2	53:18:54	64:43:22	76:7:51	मं
3	76:7:51	87:32:19	98:56:48	श
4	98:56:48	110:21:16	128:56:48	
5	128:56:48	147:32:19	166:7:51	
6	166:7:51	184:43:22	203:18:54	चं,रा
7	203:18:54	221:54:25	233:18:54	
8	233:18:54	244:43:22	256:7:51	
9	256:7:51	267:32:19	278:56:48	शु
10	278:56:48	290:21:16	308:56:48	र,बु
11	308:56:48	327:32:19	346:7:51	
12	346:7:51	4:43:22	23:18:54	गु,के,मा

सुदर्शन चक्र

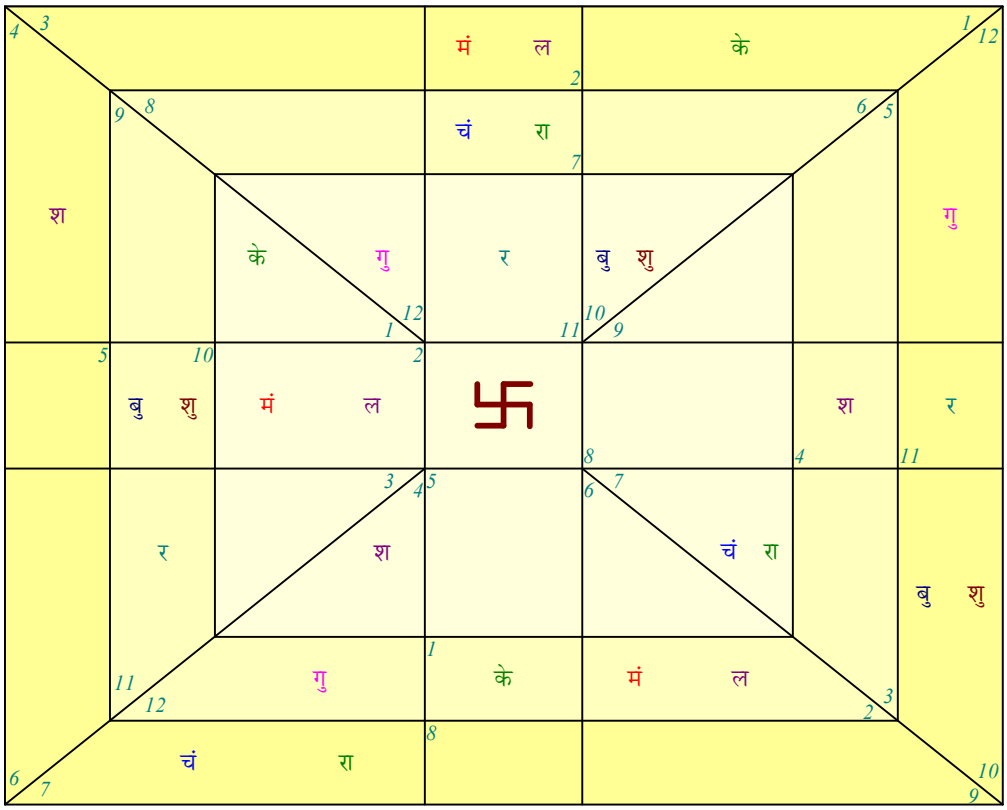

चं	=	चन्द्र	र	=	रवि	बु	=	बुध
शु	=	शुक्र	मं	=	मंगल	गु	=	गुरु
श	=	शनि	रा	=	राहु	के	=	केतु

उपग्रह

हर गृह की अपेक्षा उपगृह की भी गुणना की जाती है। चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपगृह की गुणना सूर्य के रेखांश के आधार की जाती है। यह इस प्रकार है।

धुमीदी संग के उपग्रह

गृह	उपग्रह	गुणने की प्रक्रीया या पध्धती
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्रि. 20 मिनिट.
राहु	व्यथिपात	360 - धूम
चन्द्र	परिवेष	180 + व्यथिपात
शुक्र	इंद्रचाप	360 - परिवेष
केतु	उपकेतु	इंद्रचाप + 16 डिग्रि. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपगृहों का तथा अन्य मंगल के उपग्रहों के गुणन का आधार रात और दिन के आठ समान काल में बाँटे गये विभाजन पर आधारीत रहा है।

प्रारंभ विभाग दिन के स्वामित्व के लिये रखा गया है जब की शेष भाग हप्ते के दिल के स्वामित्व के लिये उपयोग में लिया गया है। आठ विभाजन के अधिपती नहि रहे हैं।जन्म रात को हुवा हो तो आठ समभाग से सात विभाजीत भागों को गृहों का स्वामी स्थान दिया गया है। यह सप्ताह के पाँचवे दिनसे गिना जाता है।

रेखांश की गिनती केलिये दो अलग-अलग पध्धतियों का आविश्कार किया गया है।प्रथम पध्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (गृहों के स्वामी) गृहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पध्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण गृहाधीपती के आधिन रहता है।

जब गुलीक के हिसाव से देखों तो शनी के उपग्रह से एक तीसरी पध्धती का भी अनुसंधान किया गया जिससे रेखांश की गिनती की जाती है। यह नीचे दिये गये स्थाई उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार गुणनफल जो भी प्राप्त हुआ है इसे 'एस्ट्रो विज़न' के पध्धती के अनुसार 'मांदी' कहा जाता है। जन्मपत्रिका मे मुख्य गृह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 गटि	10 गटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
वुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकार्य पध्धती : लग्न के प्रारंभकाल

गृह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
रवि	काल	9:28:3	10:50:33
बुध	अर्धप्रहर	13:35:33	14:58:3
मंगल	मृत्यु	12:13:3	13:35:33
गुरु	यमकंठक	14:58:3	16:20:33
शनि	गुलिक	8:5:33	9:28:3

रेखांश उपगृह

उपग्रह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
काल	10:53:27	मेष	10:53:27	अशविनि	4
अर्धप्रहर	78:17:17	मिथुन	18:17:17	आर्द्र	4
मृत्यु	59:34:40	वृषभ	29:34:40	मृगशिरा	2
यमकंठक	95:29:40	कर्क	5:29:40	पुष्य	1
गुलिक	338:41:39	मीन	8:41:39	उत्तर भद्रपाढा	2
परिवेष	98:54:59	कर्क	8:54:59	पुष्य	2
इंद्रचाप	261:5:0	धनु	21:5:0	पूर्वषाढा	3
व्यथिपात	278:54:59	मकर	8:54:59	उत्तरषाढा	4
उपकेतु	277:45:0	मकर	7:45:0	उत्तरषाढा	4
धूम	81:5:0	मिथुन	21:5:0	पुर्नवासु	1

नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी सहपती / नक्षत्राधी अनुसहपती तथां उपग्रहों की नामावली।

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	अशविनि	केतु	शनि	राहु
अर्धप्रहर	आर्द्र	राहु	चन्द्र	राहु
मृत्यु	मृगशिरा	मंगल	शनि	राहु
यमकंठक	पुष्य	शनि	बुध	बुध
गुलिक	उत्तर भद्रपाढा	शनि	शुक्र	चन्द्र
परिवेष	पुष्य	शनि	शुक्र	राहु
इंद्रचाप	पूर्वषाढा	शुक्र	गुरु	शुक्र
व्यथिपात	उत्तरषाढा	रवि	शुक्र	गुरु
उपकेतु	उत्तरषाढा	रवि	केतु	बुध
धूम	पुर्नवासु	गुरु	गुरु	शुक्र

उपग्रह राशी

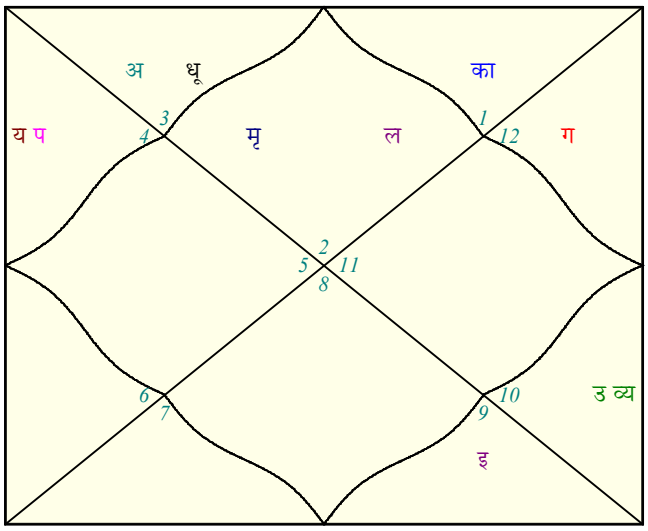

का	=	काल	अ	=	अर्धप्रहर
मृ	=	मृत्यु	य	=	यमकंठक
ग	=	गुलिक	प	=	परिवेष
इ	=	इंद्रचाप	व्य	=	व्यथिपात
उ	=	उपकेतु	धू	=	धूम

कराकास (जयमिनी सिस्टेम्म)

	कारक	गृह	
१	आत्म करक	गुरु	करकांसाः मीन
२	अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	मंगल	
३	भ्रात्रि (बाई / बहन)	चन्द्र	
४	मात्रि (माता)	बुध	
५	पुत्र (बच्चे)	शुक्र	
६	ज्ञाति (रिशतेदार)	रवि	
७	दारा (पति या पत्नी)	शनि	

अरुढ़ /पाढ़ा

कोड	अरुढ़/पाढ़ा	राशी
P 1	लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	कन्या
P 2	धन अरुढ़ा	सिंह
P 3	विक्रम /मात्रु पाढ़ा	मकर
P 4	मात्रु/सुख पाढ़ा	सिंह
P 5	मंत्र/पुत्र पाढ़ा	वृषभ
P 6	रोग/सात्रु पाढ़ा	मेष
P 7	धर/कलत्रा/स्त्री पाढ़ा	वृशचिक
P 8	मृत्यु/मरण/आयु पाढ़ा	मिथुन
P 9	पित्रु/भाग्य/धर्म पाढ़ा	मकर
P 10	कर्म/राज्य पाढ़ा	धनु
P 11	लाभ/आय पाढ़ा	मीन
P 12	व्याय/उपा पाढ़ा	मिथुन

अरुढ़ चक्र

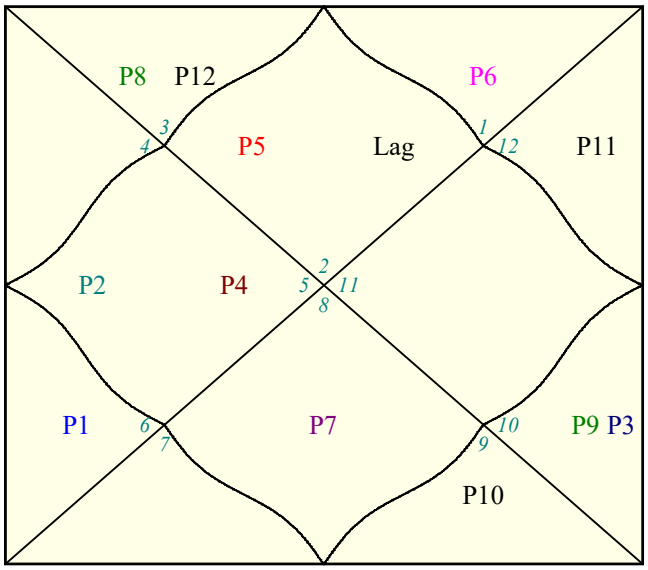

षोढसवर्गा टेबुल

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	2:	7	11	10:	10:	2:	12:	4:	7	1	12:
औरा	4:	4:	5	4:	4:	5	5	4:	4:	4:	5
द्रिख्खन	6:	11	11	2:	10:	10:	8:	4:	3	9	8:
चतूथांश	5	1	2:	1	1	11	9	4:	4:	10:	9
सप्तांश	10:	11	12:	6:	5	2:	12:	10:	12:	6:	12:
नवांश	1	12:	9	1	12:	5	12:	5	1	7	12:
दशांश	1	12:	1	9	8:	6:	5	1	2:	8:	5
व्दादशांश	6:	2:	2:	2:	1	12:	11	5	4:	10:	11
सोडांश	11	10:	9	7	5	7	12:	2:	1	1	12:
विंशाम्स	4:	12:	2:	8:	6:	2:	12:	3	4:	4:	11
चतुर्विंशाम्स	1	7	11	1	10:	1	3	6:	11	11	2:
भम्श	2:	10:	1	2:	11	3	12:	1	3	9	11
त्रिंमशांश	6:	9	11	6:	6:	8:	8:	2:	3	3	8:
खवेदांश	10:	12:	11	10:	5	6:	9	11	7	7	8:
	10:	3	4:	6:	12:	8:	4:	6:	11	11	3
शष्टियांश	1	6:	2:	9	1	6:	10:	11	5	11	8:
ओजराशी गणन	6	7	10	6	7	6	6	7	10	10	7

1-मेष 2-वृषभ 3-मिथुन 4-कर्क 5-सिंह 6-कन्या
7-तुला 8-वृशचिक 9-धनु 10-मकर 11-कुंम्भ 12-मीन

वर्गोत्तम

गुरु गुलिक वर्गोतम में है ।

षोढसवर्गा अधिपति

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	शु	=शु	~श	=श	+श	=शु	^गु	~चं	+शु	+मं	गु
औरा	चं	^चं	^र	~चं	~चं	+र	+र	~चं	=चं	=चं	र
द्रिख्खन	बु	=श	~श	+शु	+श	=श	+मं	~चं	+बु	+गु	मं
चतूथांश	र	=मं	~शु	=मं	=मं	=श	^गु	~चं	=चं	~श	गु
सप्तांश	श	=श	+गु	^बु	~र	=शु	^गु	^श	~गु	~बु	गु
नवांश	मं	=गु	+गु	=मं	=गु	+र	^गु	~र	=मं	=शु	गु
दशांश	मं	=गु	+मं	=गु	=मं	~बु	+र	~मं	+शु	+मं	र
व्दादशांश	बु	=शु	~शु	+शु	=मं	+गु	=श	~र	=चं	~श	श
सोडांश	श	=श	+गु	+शु	~र	=शु	^गु	+शु	=मं	+मं	गु
विंशाम्स	चं	=गु	~शु	=मं	+बु	=शु	^गु	+बु	=चं	=चं	श
चतुर्विंशाम्स	मं	=शु	~श	=मं	+श	^मं	~बु	+बु	+श	~श	शु
भम्श	शु	=श	+मं	+शु	+श	~बु	^गु	~मं	+बु	+गु	श
त्रिंमशांश	बु	=गु	~श	^बु	+बु	^मं	+मं	+शु	+बु	~बु	मं
खवेदांश	श	=गु	~श	=श	~र	~बु	^गु	^श	+शु	=शु	मं
	श	+बु	+चं	^बु	=गु	^मं	+चं	+बु	+श	~श	बु
शष्टियांश	मं	+बु	~शु	=गु	=मं	~बु	=श	^श	~र	~श	मं

^ अपना वर्ग   + क़्ब्द्रत्ड्डदड्डुथ्र   = निश्पक्षीय   ~ शत्रु

वर्गा भेढ

स्वावर्ग और उच्च वर्ग के लिए पोयन्ट्र दिया जाता है ।

गृहों	षढ़वर्ग	सप्तवर्गा	दाशवर्ग	षोढ़सवर्ग
चन्द्र	2-किम्सुकम्स	2-किम्सुकम्स	2-पारिजातांस	2-बीढ़काम्स
रवि	1-…	1-…	2-पारिजातांस	3-कुसुमाम्स
बुध	1-…	2-किम्सुकम्स	2-पारिजातांस	3-कुसुमाम्स
शुक्र	1-…	1-…	1-…	2-बीढ़काम्स
मंगल	2-किम्सुकम्स	2-किम्सुकम्स	2-पारिजातांस	4-नागपुष्पाम्स
गुरु	2-किम्सुकम्स	3-व्यजनांमस	4-गेपुराम्स	9-पूर्वचन्द्राम्स
शनि	0-	1-…	2-पारिजातांस	3-कुसुमाम्स

षोढ़सवर्ग चार्ट

राशी[D1]

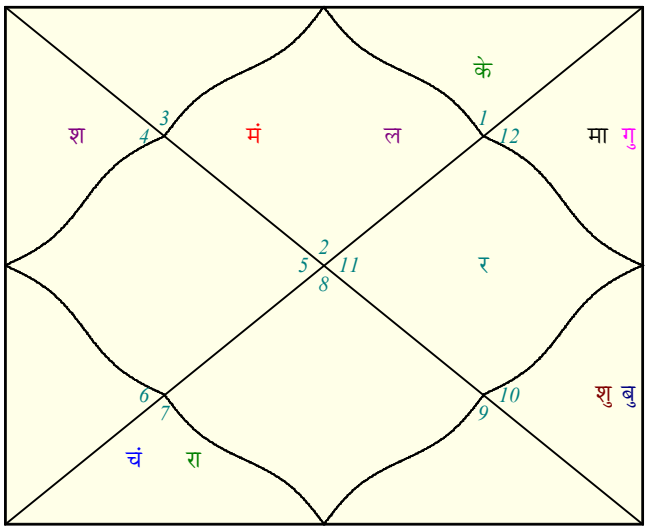

औरा[D2]

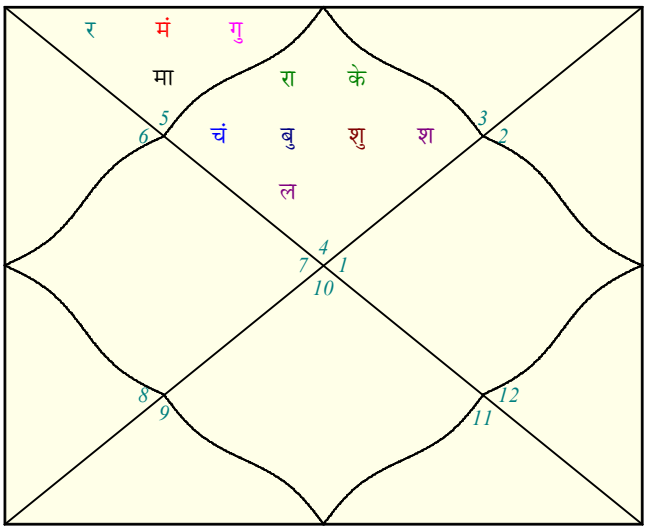

द्रिख्खन[D3]

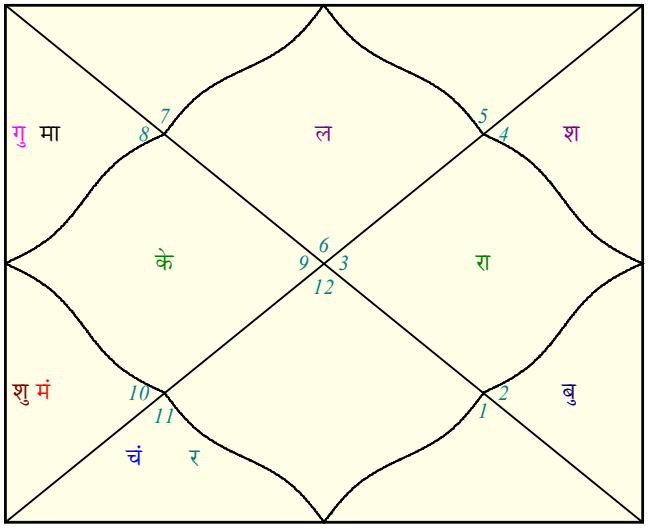

चतूथांश[D4]

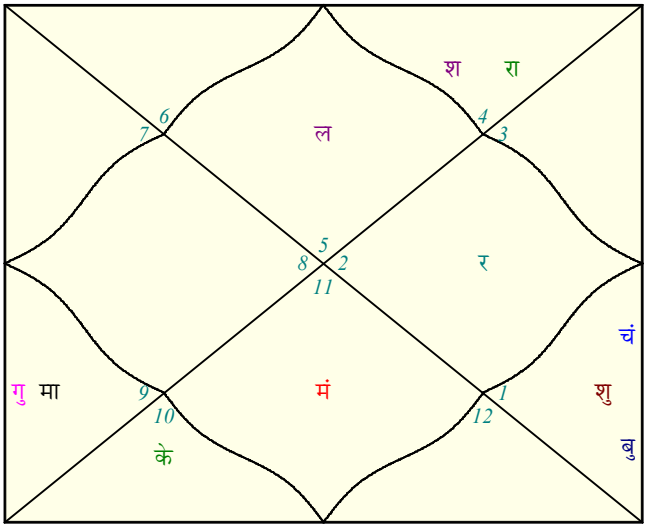

सप्तांश[D7]

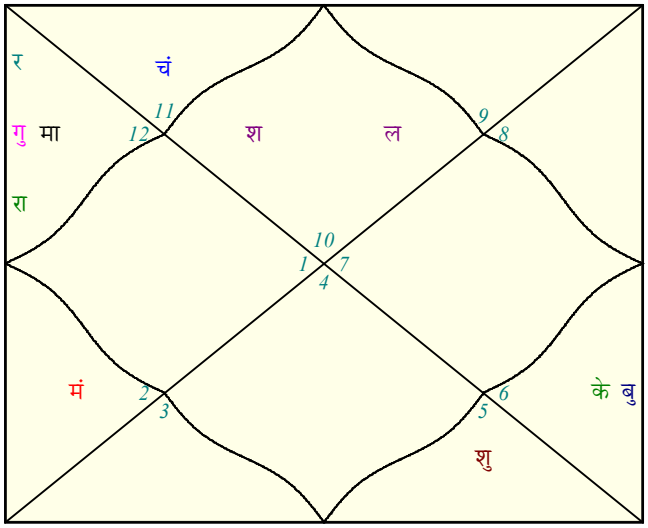

नवांश[D9]

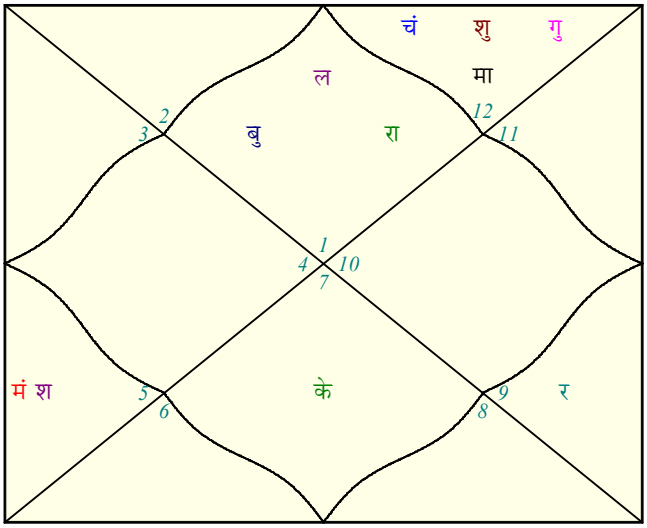

दशांश[D10]

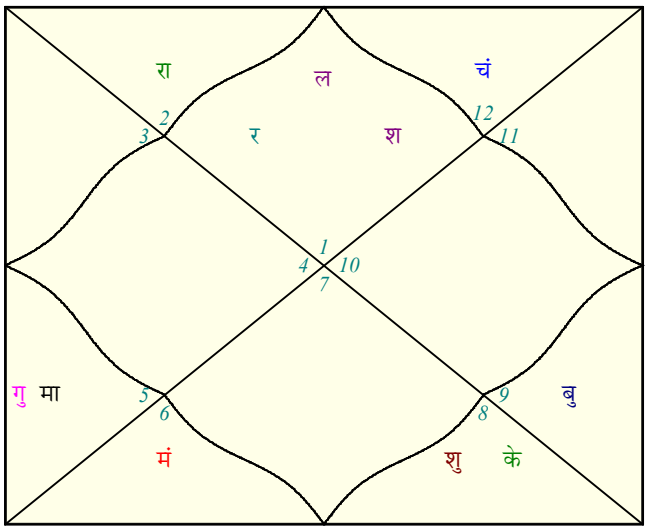

व्दादशांश[D12]

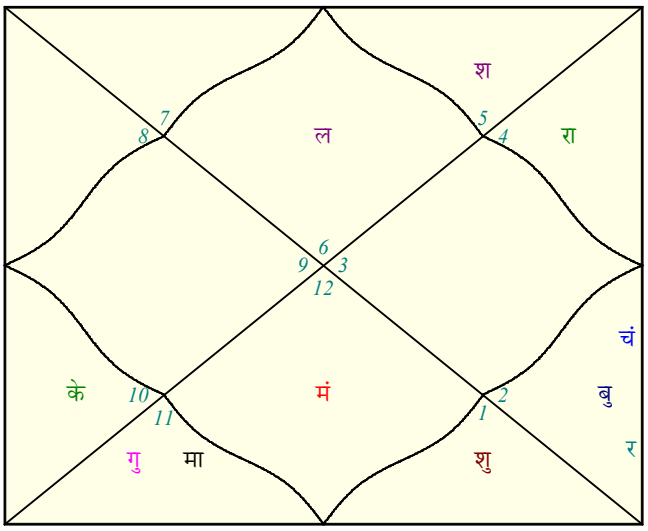

सोडांश[D16]

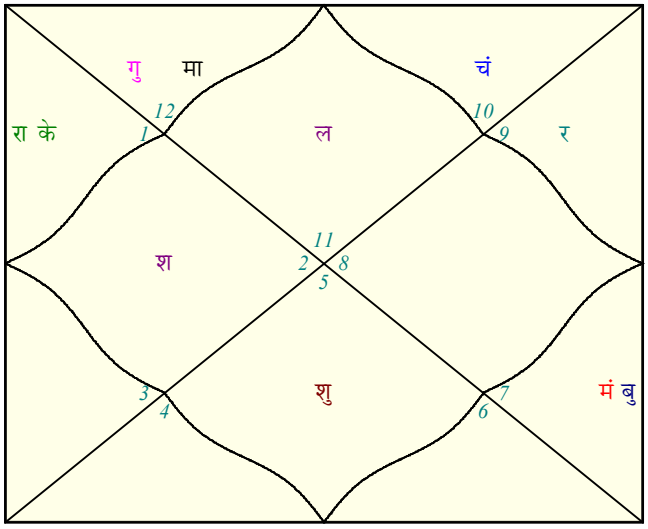

विंशाम्स[D20]

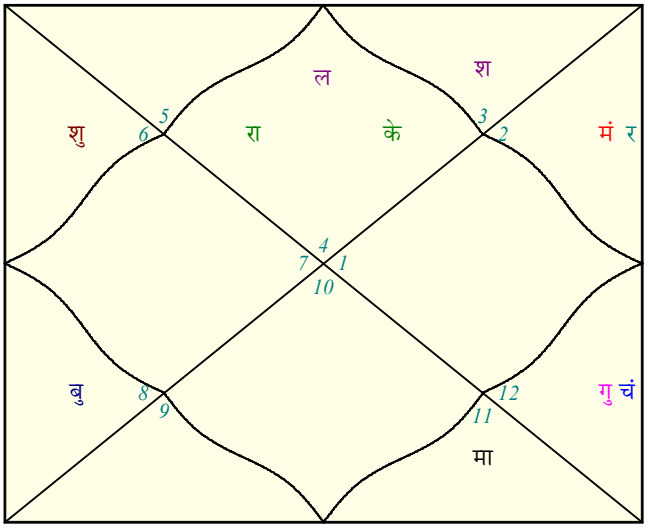

चतुर्विंशाम्स[D24]

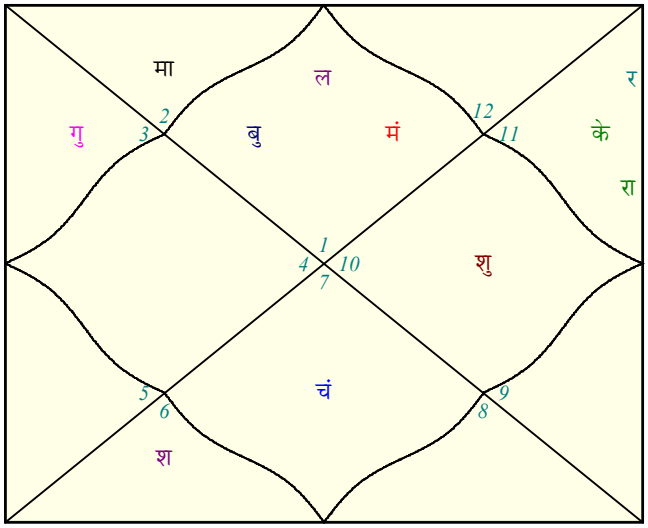

भम्श[D27]

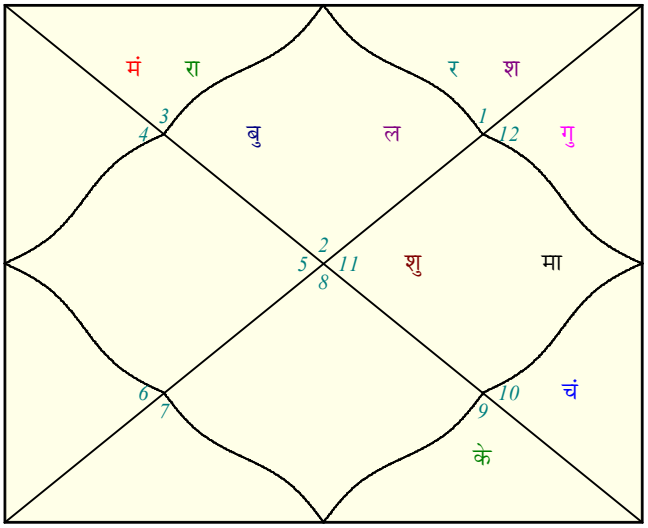

त्रिंमशांश[D30]

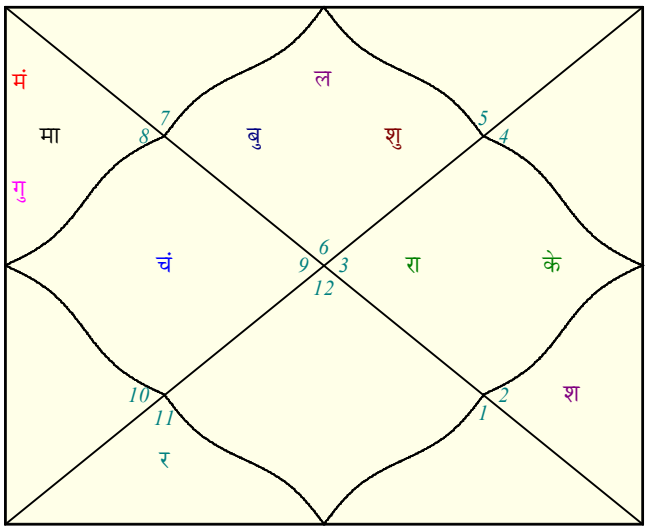

खवेदांश[D40]

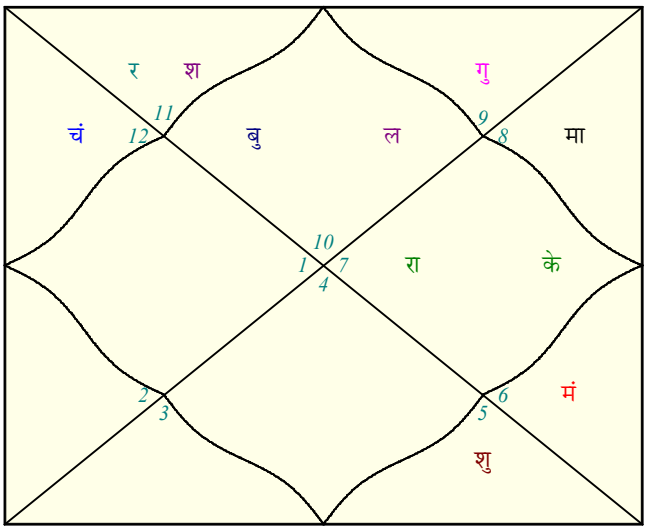

[D45]

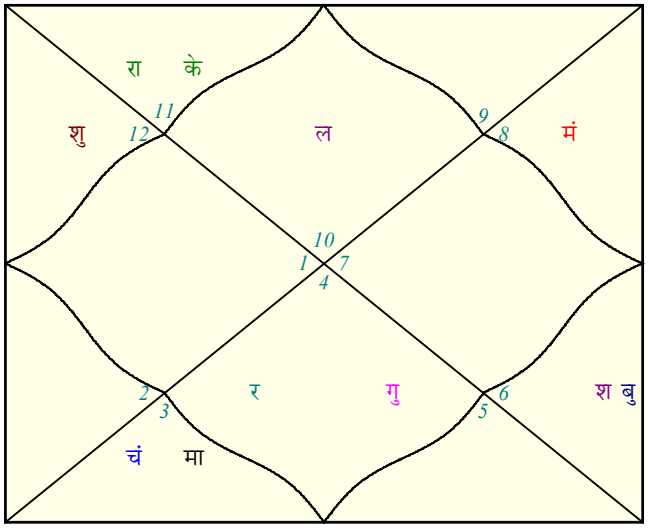

शष्टियांश[D60]

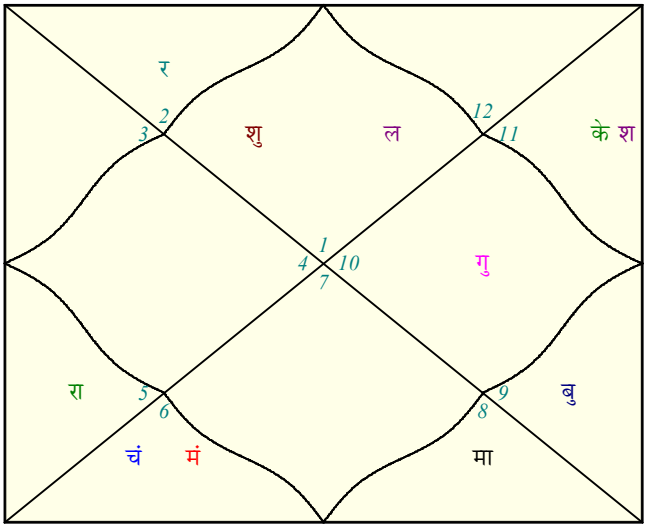

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - चन्द्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1	1	1	1					4
वृषभ			1	1			1		3
मिथुन					1	1			2
कर्क	1	1	1	1	1			1	6
सिंह	1	1	1						3
कन्या		1		1	1	1	1		5
तुला	1		1	1	1	1		1	6
वृशचिक		1	1	1			1		4
धनु	1	1				1	1		4
मकर			1		1	1			3
कुंम्भ					1	1		1	3
मीन	1		1	1	1	1		1	6
सभी मिलाकार	6	6	8	7	7	7	4	4	49

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - रवि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष							1	1	2
वृषभ		1	1		1		1		4
मिथुन			1	1	1				3
कर्क	1			1		1	1	1	5
सिंह	1	1			1	1	1	1	6
कन्या		1	1						2
तुला		1	1				1	1	4
वृशचिक		1	1		1	1			4
धनु	1	1	1	1	1				5
मकर					1	1	1		3
कुंम्भ		1			1		1	1	4
मीन	1	1	1		1		1	1	6
सभी मिलाकार	4	8	7	3	8	4	8	6	48

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - बुध

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष				1			1		2
वृषभ	1		1	1	1		1	1	6
मिथुन		1	1		1			1	4
कर्क	1	1					1		3
सिंह	1			1	1	1	1	1	6
कन्या			1	1					2
तुला		1	1			1	1	1	5
वृशचिक	1		1	1	1				4
धनु		1	1		1			1	4
मकर	1	1	1	1	1	1	1		7
कुंम्भ				1	1	1	1	1	5
मीन	1		1	1	1		1	1	6
सभी मिलाकार	6	5	8	8	8	4	8	7	54

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - शुक्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष				1	1		1		3
वृषभ	1		1	1			1	1	5
मिथुन	1		1					1	3
कर्क					1	1		1	3
सिंह	1			1				1	3
कन्या	1	1	1	1	1		1	1	7
तुला	1			1	1	1	1		5
वृशचिक	1		1	1		1	1		5
धनु	1	1				1		1	4
मकर	1	1		1	1	1		1	6
कुंम्भ	1			1			1		3
मीन			1	1	1		1	1	5
सभी मिलाकार	9	3	5	9	6	5	7	8	52

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - मंगल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष		1					1		2
वृषभ			1		1		1	1	4
मिथुन		1	1	1	1				4
कर्क		1					1	1	3
सिंह	1			1	1	1			4
कन्या									0
तुला							1	1	2
वृशचिक		1	1	1	1				4
धनु	1	1		1	1	1			5
मकर						1	1		2
कुंम्भ					1	1	1	1	4
मीन	1		1		1		1	1	5
सभी मिलाकार	3	5	4	4	7	4	7	5	39

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - गुरु

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1	1	1			1			4
वृषभ		1	1	1	1	1		1	6
मिथुन	1		1	1	1	1	1	1	7
कर्क									0
सिंह	1	1			1			1	4
कन्या		1	1	1		1	1	1	6
तुला		1	1	1		1		1	5
वृशचिक	1	1	1	1	1		1	1	7
धनु		1			1	1	1		4
मकर			1			1		1	3
कुंम्भ	1	1	1	1	1			1	6
मीन		1			1	1		1	4
सभी मिलाकार	5	9	8	6	7	8	4	9	56

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - शनि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष					1				1
वृषभ		1					1	1	3
मिथुन			1	1					2
कर्क					1	1		1	3
सिंह	1	1	1			1		1	5
कन्या		1	1		1		1		4
तुला			1		1			1	3
वृशचिक		1	1	1			1		4
धनु	1	1	1	1			1		5
मकर						1			1
कुंम्भ		1			1	1		1	4
मीन	1	1			1			1	4
सभी मिलाकार	3	7	6	3	6	4	4	6	39

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	4	2	2	3	2	4	1	18
वृषभ	3	4	6	5	4	6	3	31
मिथुन	2	3	4	3	4	7	2	25
कर्क	6	5	3	3	3	0	3	23
सिंह	3	6	6	3	4	4	5	31
कन्या	5	2	2	7	0	6	4	26
तुला	6	4	5	5	2	5	3	30
वृशचिक	4	4	4	5	4	7	4	32
धनु	4	5	4	4	5	4	5	31
मकर	3	3	7	6	2	3	1	25
कुंम्भ	3	4	5	3	4	6	4	29
मीन	6	6	6	5	5	4	4	36
	49	48	54	52	39	56	39	337

अष्टकवर्ग कुंडलियाँ

चन्द्र अष्टकवर्ग 49

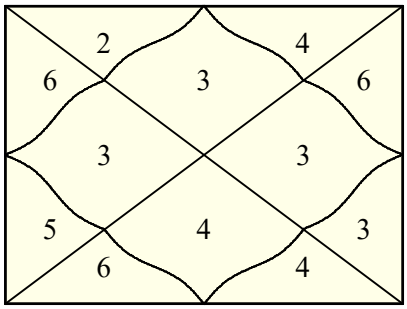

रवि अष्टकवर्ग 48

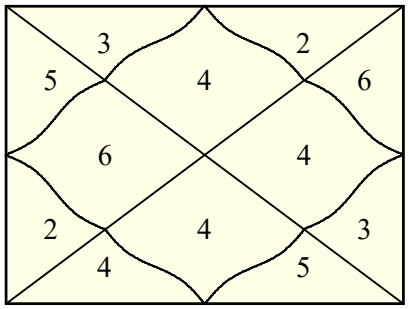

बुध अष्टकवर्ग 54

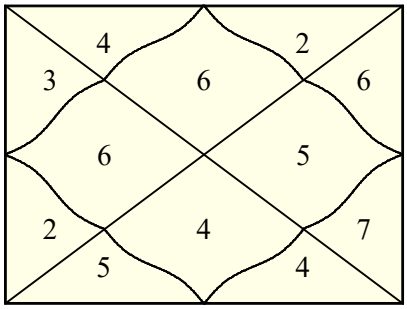

शुक्र अष्टकवर्ग 52

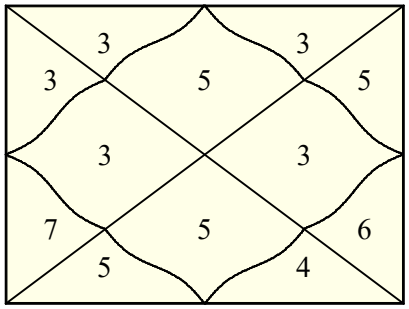

मंगल अष्टकवर्ग 39

गुरु अष्टकवर्ग 56

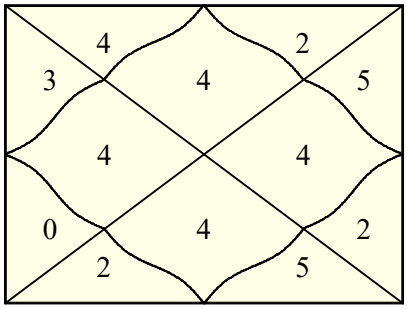

शनि अष्टकवर्ग 39

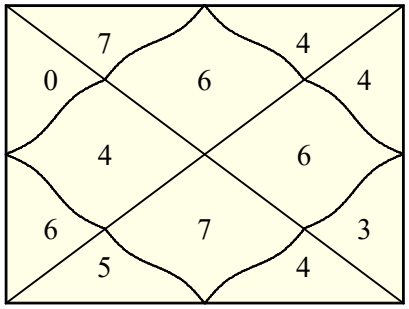

सर्व अष्टकवर्ग 337

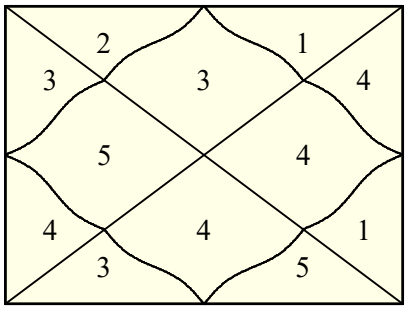

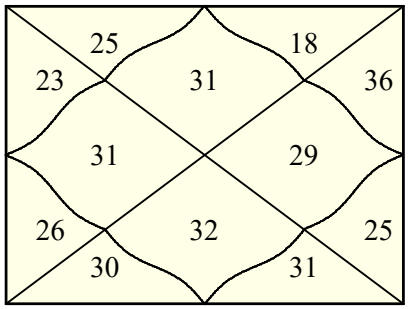

अष्टकवर्ग - त्रिकोण कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 13

रवि अष्टकवर्ग 15

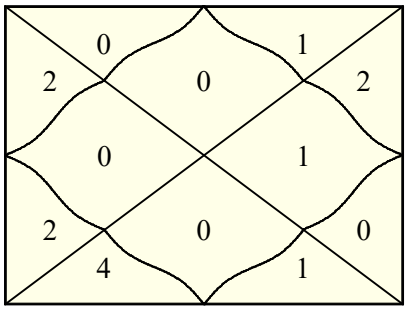

बुध अष्टकवर्ग 21

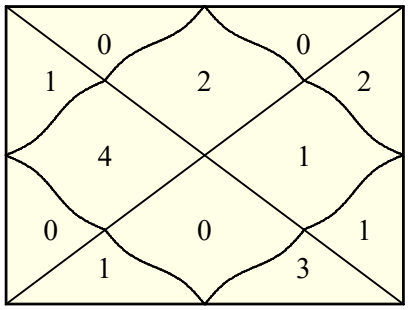

शुक्र अष्टकवर्ग 10

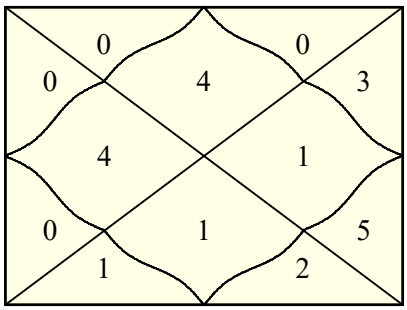

मंगल अष्टकवर्ग 18

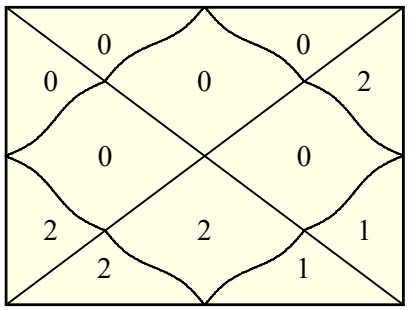

गुरु अष्टकवर्ग 20

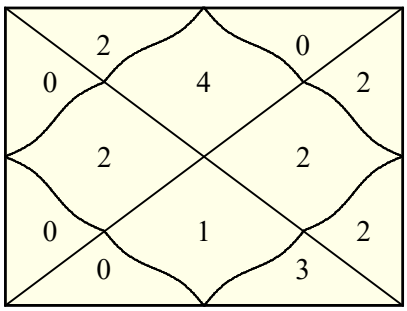

शनि अष्टकवर्ग 18

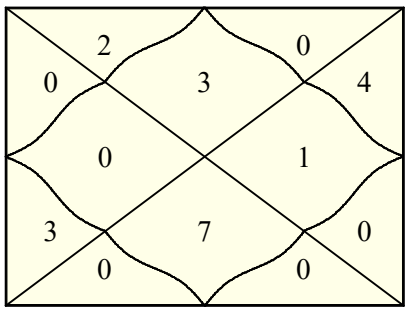

सर्व अष्टकवर्ग 115

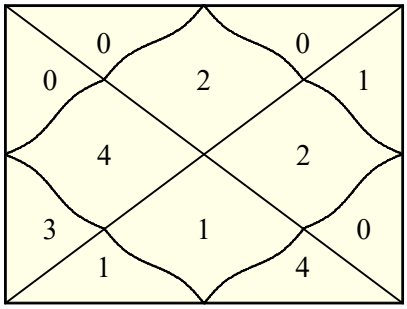

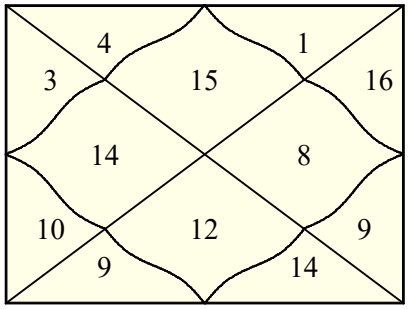

अष्टकवर्ग - एकाधिपती कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 12

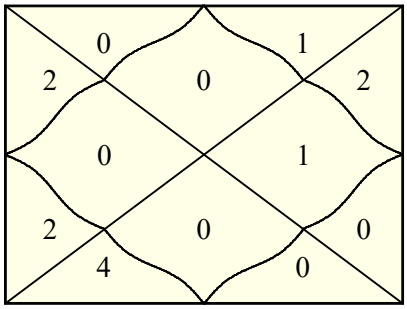

रवि अष्टकवर्ग 14

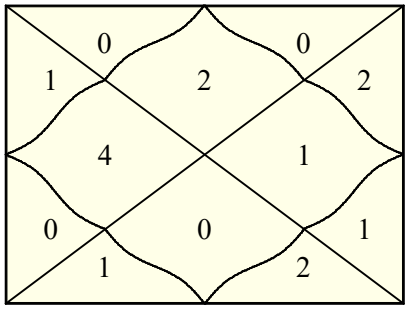

बुध अष्टकवर्ग 19

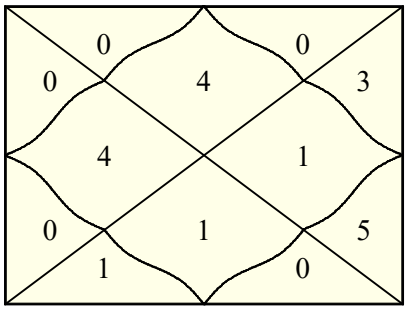

शुक्र अष्टकवर्ग 9

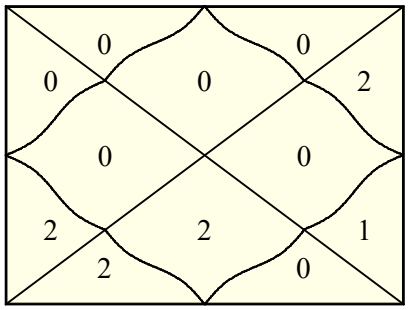

मंगल अष्टकवर्ग 17

गुरु अष्टकवर्ग 20

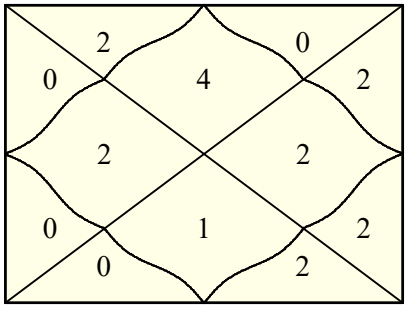

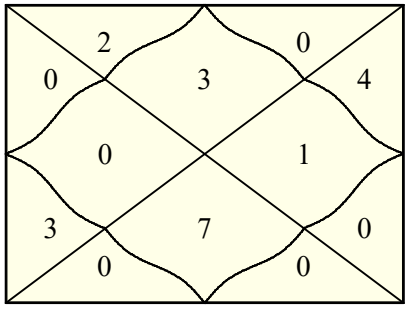

शनि अष्टकवर्ग 15

सर्व अष्टकवर्ग 106

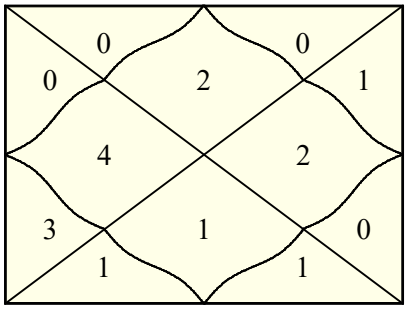

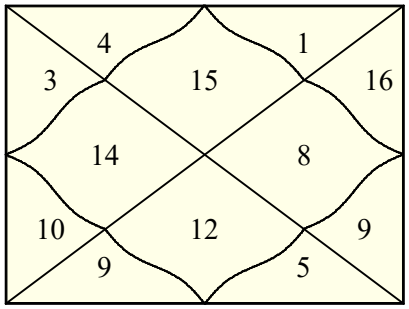

विंषोत्तरी दशा का सेक्षिप्त विवरण

प्ड्डुह्मण्फ दाश शुरुआत का उम्र (वर्ष : मास :दिवस) (YY:MM:DD)

गुरु > 03:01:01 शनि > 19:01:01 बुध > 38:01:01
केतु > 55:01:01 शुक्र > 62:01:01 रवि > 82:01:01
चन्द्र > 88:01:01

दशा और भुक्ती का विवरण काल

(साल = 365.25 दिन)
जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 3 साल, 0 महीने, 29 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
रा	र	20-02-1976	01-09-1976
रा	चं	01-09-1976	03-03-1978
रा	मं	03-03-1978	21-03-1979
गु	गु	21-03-1979	09-05-1981
गु	श	09-05-1981	20-11-1983
गु	बु	20-11-1983	25-02-1986
गु	के	25-02-1986	01-02-1987
गु	शु	01-02-1987	02-10-1989
गु	र	02-10-1989	21-07-1990
गु	चं	21-07-1990	20-11-1991
गु	मं	20-11-1991	26-10-1992
गु	रा	26-10-1992	21-03-1995
श	श	21-03-1995	24-03-1998
श	बु	24-03-1998	01-12-2000
श	के	01-12-2000	10-01-2002
श	शु	10-01-2002	12-03-2005
श	र	12-03-2005	22-02-2006
श	चं	22-02-2006	23-09-2007
श	मं	23-09-2007	01-11-2008
श	रा	01-11-2008	08-09-2011
श	गु	08-09-2011	21-03-2014
बु	बु	21-03-2014	17-08-2016
बु	के	17-08-2016	14-08-2017
बु	शु	14-08-2017	14-06-2020
बु	र	14-06-2020	20-04-2021
बु	चं	20-04-2021	20-09-2022
बु	मं	20-09-2022	17-09-2023
बु	रा	17-09-2023	05-04-2026
बु	गु	05-04-2026	11-07-2028
बु	श	11-07-2028	21-03-2031
के	के	21-03-2031	18-08-2031

के	शु	18-08-2031	17-10-2032
के	र	17-10-2032	21-02-2033
के	चं	21-02-2033	23-09-2033
के	मं	23-09-2033	19-02-2034
के	रा	19-02-2034	09-03-2035
के	गु	09-03-2035	13-02-2036
के	श	13-02-2036	24-03-2037
के	बु	24-03-2037	21-03-2038
शु	शु	21-03-2038	21-07-2041
शु	र	21-07-2041	21-07-2042
शु	चं	21-07-2042	21-03-2044
शु	मं	21-03-2044	21-05-2045
शु	रा	21-05-2045	21-05-2048
शु	गु	21-05-2048	20-01-2051
शु	श	20-01-2051	21-03-2054
शु	बु	21-03-2054	19-01-2057
शु	के	19-01-2057	21-03-2058
र	र	21-03-2058	09-07-2058
र	चं	09-07-2058	07-01-2059
र	मं	07-01-2059	15-05-2059
र	रा	15-05-2059	08-04-2060
र	गु	08-04-2060	25-01-2061
र	श	25-01-2061	07-01-2062
र	बु	07-01-2062	14-11-2062
र	के	14-11-2062	21-03-2063
र	शु	21-03-2063	21-03-2064
चं	चं	21-03-2064	19-01-2065
चं	मं	19-01-2065	20-08-2065
चं	रा	20-08-2065	19-02-2067
चं	गु	19-02-2067	20-06-2068
चं	श	20-06-2068	19-01-2070
चं	बु	19-01-2070	21-06-2071

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

वर्तमान वर्ष से २५ साल तक पर्यन्तर दशा काल

दशा : बुध अपहार : रवि

1.र	14-06-2020	>> 29-06-2020	**2.चं**	29-06-2020	>> 25-07-2020
3.मं	25-07-2020	>> 12-08-2020	**4.रा**	12-08-2020	>> 28-09-2020
5.गु	28-09-2020	>> 08-11-2020	**6.श**	08-11-2020	>> 27-12-2020
7.बु	27-12-2020	>> 09-02-2021	**8.के**	09-02-2021	>> 28-02-2021
9.शु	28-02-2021	>> 20-04-2021			

दशा : बुध अपहार : चन्द्र

1.चं	20-04-2021	>> 02-06-2021	**2.मं**	02-06-2021	>> 03-07-2021
3.रा	03-07-2021	>> 18-09-2021	**4.गु**	18-09-2021	>> 26-11-2021
5.श	26-11-2021	>> 16-02-2022	**6.बु**	16-02-2022	>> 30-04-2022
7.के	30-04-2022	>> 31-05-2022	**8.शु**	31-05-2022	>> 25-08-2022
9.र	25-08-2022	>> 20-09-2022			

दशा : बुध अपहार : मंगल

1.मं	20-09-2022	>> 11-10-2022	**2.रा**	11-10-2022	>> 04-12-2022
3.गु	04-12-2022	>> 22-01-2023	**4.श**	22-01-2023	>> 20-03-2023
5.बु	20-03-2023	>> 10-05-2023	**6.के**	10-05-2023	>> 31-05-2023
7.शु	31-05-2023	>> 31-07-2023	**8.र**	31-07-2023	>> 18-08-2023
9.चं	18-08-2023	>> 17-09-2023			

दशा : बुध अपहार : राहु

1.रा	17-09-2023	>> 04-02-2024	**2.गु**	04-02-2024	>> 07-06-2024
3.श	07-06-2024	>> 01-11-2024	**4.बु**	01-11-2024	>> 13-03-2025
5.के	13-03-2025	>> 07-05-2025	**6.शु**	07-05-2025	>> 09-10-2025
7.र	09-10-2025	>> 24-11-2025	**8.चं**	24-11-2025	>> 10-02-2026
9.मं	10-02-2026	>> 05-04-2026			

दशा : बुध अपहार : गुरु

1.गु	05-04-2026	>> 25-07-2026	**2.श**	25-07-2026	>> 03-12-2026
3.बु	03-12-2026	>> 30-03-2027	**4.के**	30-03-2027	>> 17-05-2027
5.शु	17-05-2027	>> 02-10-2027	**6.र**	02-10-2027	>> 13-11-2027
7.चं	13-11-2027	>> 21-01-2028	**8.मं**	21-01-2028	>> 09-03-2028
9.रा	09-03-2028	>> 11-07-2028			

दशा : बुध अपहार : शनि

1.श	11-07-2028	>> 14-12-2028	**2.बु**	14-12-2028	>> 02-05-2029
3.के	02-05-2029	>> 29-06-2029	**4.शु**	29-06-2029	>> 09-12-2029
5.र	09-12-2029	>> 28-01-2030	**6.चं**	28-01-2030	>> 19-04-2030
7.मं	19-04-2030	>> 16-06-2030	**8.रा**	16-06-2030	>> 10-11-2030
9.गु	10-11-2030	>> 21-03-2031			

दशा : केतु अपहार : केतु

1.के	21-03-2031	>> 30-03-2031	**2.शु**	30-03-2031	>> 24-04-2031
3.र	24-04-2031	>> 01-05-2031	**4.चं**	01-05-2031	>> 14-05-2031
5.मं	14-05-2031	>> 23-05-2031	**6.रा**	23-05-2031	>> 14-06-2031
7.गु	14-06-2031	>> 04-07-2031	**8.श**	04-07-2031	>> 27-07-2031
9.बु	27-07-2031	>> 18-08-2031			

दशा : केतु अपहार : शुक्र

1.शु	18-08-2031	>> 28-10-2031	**2.र**	28-10-2031	>> 18-11-2031
3.चं	18-11-2031	>> 23-12-2031	**4.मं**	23-12-2031	>> 17-01-2032
5.रा	17-01-2032	>> 21-03-2032	**6.गु**	21-03-2032	>> 17-05-2032
7.श	17-05-2032	>> 23-07-2032	**8.बु**	23-07-2032	>> 22-09-2032
9.के	22-09-2032	>> 17-10-2032			

दशा : केतु अपहार : रवि

1.र	17-10-2032	>> 23-10-2032	**2.चं**	23-10-2032	>> 03-11-2032
3.मं	03-11-2032	>> 10-11-2032	**4.रा**	10-11-2032	>> 29-11-2032
5.गु	29-11-2032	>> 16-12-2032	**6.श**	16-12-2032	>> 06-01-2033
7.बु	06-01-2033	>> 24-01-2033	**8.के**	24-01-2033	>> 31-01-2033
9.शु	31-01-2033	>> 21-02-2033			

दशा : केतु अपहार : चन्द्र

1.चं	21-02-2033	>> 11-03-2033	**2.मं**	11-03-2033	>> 24-03-2033
3.रा	24-03-2033	>> 25-04-2033	**4.गु**	25-04-2033	>> 23-05-2033
5.श	23-05-2033	>> 26-06-2033	**6.बु**	26-06-2033	>> 26-07-2033
7.के	26-07-2033	>> 07-08-2033	**8.शु**	07-08-2033	>> 12-09-2033
9.र	12-09-2033	>> 23-09-2033			

दशा : केतु अपहार : मंगल

1.मं	23-09-2033	>> 01-10-2033	**2.रा**	01-10-2033	>> 24-10-2033
3.गु	24-10-2033	>> 13-11-2033	**4.श**	13-11-2033	>> 06-12-2033
5.बु	06-12-2033	>> 27-12-2033	**6.के**	27-12-2033	>> 05-01-2034
7.शु	05-01-2034	>> 30-01-2034	**8.र**	30-01-2034	>> 06-02-2034
9.चं	06-02-2034	>> 19-02-2034			

दशा : केतु अपहार : राहु

1.रा	19-02-2034	>> 17-04-2034	**2.गु**	17-04-2034	>> 07-06-2034
3.श	07-06-2034	>> 07-08-2034	**4.बु**	07-08-2034	>> 30-09-2034
5.के	30-09-2034	>> 23-10-2034	**6.शु**	23-10-2034	>> 26-12-2034
7.र	26-12-2034	>> 14-01-2035	**8.चं**	14-01-2035	>> 15-02-2035
9.मं	15-02-2035	>> 09-03-2035			

दशा : केतु अपहार : गुरु

1.गु	09-03-2035	>> 24-04-2035	**2.श**	24-04-2035	>> 17-06-2035
3.बु	17-06-2035	>> 04-08-2035	**4.के**	04-08-2035	>> 24-08-2035
5.शु	24-08-2035	>> 20-10-2035	**6.र**	20-10-2035	>> 06-11-2035
7.चं	06-11-2035	>> 04-12-2035	**8.मं**	04-12-2035	>> 24-12-2035
9.रा	24-12-2035	>> 13-02-2036			

दशा : केतु अपहार : शनि

1.श	13-02-2036	>> 17-04-2036	**2.बु**	17-04-2036	>> 14-06-2036
3.के	14-06-2036	>> 07-07-2036	**4.शु**	07-07-2036	>> 13-09-2036
5.र	13-09-2036	>> 03-10-2036	**6.चं**	03-10-2036	>> 06-11-2036
7.मं	06-11-2036	>> 29-11-2036	**8.रा**	29-11-2036	>> 29-01-2037
9.गु	29-01-2037	>> 24-03-2037			

दशा : केतु अपहार : बुध

1.बु	24-03-2037	>> 14-05-2037	**2.के**	14-05-2037	>> 04-06-2037
3.शु	04-06-2037	>> 04-08-2037	**4.र**	04-08-2037	>> 22-08-2037
5.चं	22-08-2037	>> 21-09-2037	**6.मं**	21-09-2037	>> 12-10-2037
7.रा	12-10-2037	>> 05-12-2037	**8.गु**	05-12-2037	>> 23-01-2038
9.श	23-01-2038	>> 21-03-2038			

दशा : शुक्र अपहार : शुक्र

1.शु 21-03-2038 >> 10-10-2038 **2.र** 10-10-2038 >> 10-12-2038
3.चं 10-12-2038 >> 21-03-2039 **4.मं** 21-03-2039 >> 31-05-2039
5.रा 31-05-2039 >> 30-11-2039 **6.गु** 30-11-2039 >> 10-05-2040
7.श 10-05-2040 >> 19-11-2040 **8.बु** 19-11-2040 >> 11-05-2041
9.के 11-05-2041 >> 21-07-2041

दशा : शुक्र अपहार : रवि

1.र 21-07-2041 >> 08-08-2041 **2.चं** 08-08-2041 >> 07-09-2041
3.मं 07-09-2041 >> 29-09-2041 **4.रा** 29-09-2041 >> 22-11-2041
5.गु 22-11-2041 >> 10-01-2042 **6.श** 10-01-2042 >> 09-03-2042
7.बु 09-03-2042 >> 30-04-2042 **8.के** 30-04-2042 >> 21-05-2042
9.शु 21-05-2042 >> 21-07-2042

दशा : शुक्र अपहार : चन्द्र

1.चं 21-07-2042 >> 10-09-2042 **2.मं** 10-09-2042 >> 15-10-2042
3.रा 15-10-2042 >> 14-01-2043 **4.गु** 14-01-2043 >> 06-04-2043
5.श 06-04-2043 >> 11-07-2043 **6.बु** 11-07-2043 >> 05-10-2043
7.के 05-10-2043 >> 10-11-2043 **8.शु** 10-11-2043 >> 19-02-2044
9.र 19-02-2044 >> 21-03-2044

दशा : शुक्र अपहार : मंगल

1.मं 21-03-2044 >> 14-04-2044 **2.रा** 14-04-2044 >> 17-06-2044
3.गु 17-06-2044 >> 13-08-2044 **4.श** 13-08-2044 >> 20-10-2044
5.बु 20-10-2044 >> 19-12-2044 **6.के** 19-12-2044 >> 13-01-2045
7.शु 13-01-2045 >> 25-03-2045 **8.र** 25-03-2045 >> 15-04-2045
9.चं 15-04-2045 >> 21-05-2045

दशा : शुक्र अपहार : राहु

1.रा 21-05-2045 >> 01-11-2045 **2.गु** 01-11-2045 >> 27-03-2046
3.श 27-03-2046 >> 17-09-2046 **4.बु** 17-09-2046 >> 19-02-2047
5.के 19-02-2047 >> 24-04-2047 **6.शु** 24-04-2047 >> 23-10-2047
7.र 23-10-2047 >> 17-12-2047 **8.चं** 17-12-2047 >> 18-03-2048
9.मं 18-03-2048 >> 21-05-2048

गृहस्थान के स्वामी

प्रथम	भाव के स्वामी	(केन्द्र)	: शुक्र
दूसरा	,,	(पनप्र)	: बुध
तिसरा	,,	(अपोक्लीमा)	: चन्द्र
चौथा	,,	(केन्द्र)	: रवि
पंचम	,,	(त्रीकोण)	: बुध
छठ्ठा	,,	(अपोक्लीमा)	: शुक्र
सातवँ	,,	(केन्द्र)	: मंगल
आठवाँ	,,	(पनप्र)	: गुरु
नवमा	,,	(त्रीकोण)	: शनि
दशावाँ	,,	(केन्द्र)	: शनि
अग्यारवाँ	,,	(पनप्र)	: गुरु
बारहवाँ	,,	(अपोक्लीमा)	: मंगल

गृहों का योग

चन्द्र	प्रभावित होता है	राहु
बुध	प्रभावित होता है	शुक्र
शुक्र	प्रभावित होता है	बुध
मंगल	प्रभावित होता है	लग्न

एक गृह से दूसरे गृह की अपेक्षा से

चन्द्र	अपेक्षित केतु
बुध	अपेक्षित शनि
शुक्र	अपेक्षित शनि
गुरु	अपेक्षित शनि
शनि	अपेक्षित बुध,शुक्र,केतु

गृह और उसके स्थान की अपेक्षा से

चन्द्र	अपेक्षित बारहवाँ
रवि	अपेक्षित चौथा
बुध	अपेक्षित तिसरा
शुक्र	अपेक्षित तिसरा
मंगल	अपेक्षित चौथा,सातवँ,आठवाँ
गुरु	अपेक्षित तिसरा,पंचम,सातवँ
शनि	अपेक्षित पंचम,नवमा,बारहवाँ

लाभदाई और अपशकुनिय गृहों से

गुरु, शुक्र और चंन्द्र नैसर्गीक पक्षबल के लाभदाई होते हैं.शुक्लपक्ष के शष्ठी तिथि से लेकर कृष्णपक्ष के शष्ठी तिथि तक चन्द्र को पक्षबल उपलब्ध रहतै है

आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्र, पक्षबल रहित है और वह अमंगल कारी प्रभाव उत्पन्न करनेवाला है

बुध जब अमंगल तत्वों के संयोग में आता है तो वह ओर भी अमंगल और उद्वेग उत्पन्न करने वाला गृह हो जाता है

लेकिन आपकी कुडली में बुध अशुभ गृहों से संगति नहि करता

चन्द्र	-	अशुभकर्ता
रवि	-	अशुभकर्ता
बुध	-	शुभदाई
शुक्र	-	शुभदाई
मंगल	-	अशुभकर्ता
गुरु	-	शुभदाई
शनि	-	अशुभकर्ता
राहु	-	अशुभकर्ता
केतु	-	अशुभकर्ता

अशुभ और शुभ फल निरूपण

गृहों से उत्पन्न होने वाले शुभ-अशुभ फलों का निर्णय कुंडलि के स्थानिक स्वामी पर रहतै है। अलग अलग स्थान पर उसका अलग प्रभाव रहता है।
कुंडली में प्रथम स्थान, पांचवा स्थान और नवमाँ स्थान सदा लाभदाई और मंगलमय रहता है।

साधारण दृष्टी से अशुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करता है, तब वह लाभदाई और मंगलकारी बनता है।

तीसरे, छठ्ठे और अग्यारवें स्थान के स्वामी अशुभ और अमंगलकारी माने जाते हैं।

साधारण दृष्टी से शुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के सेवामीत्व को प्राप्त करते है, तब वह अशुभकारी और अमंगलमयी बनते हैं। यह केन्द्राधीपती के दोष के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिती हैं।

दूसरे, आठवें और बारहवें, कुंडली के स्थानीय स्वामी निष्पक्ष प्रकार के या शुभ-अशुभ दोनों से भिन्न प्रकार के फल देने वाले होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के छोडकर अन्य सभी गृह, कुंडली में दो स्थानों के स्वामीत्व को स्वीकार करते हैं। उनके समूल प्रत्याधात और प्रभाव को सुश्मता से देखना पडता है।

शास्त्रोक्त ग्रंन्थों से पता चलता है कि आठवे स्थान का निरुपण कुंडली के अन्य संथानों पर रहे गृह स्वामी के विश्लेषण पर अधारित है।

गृह	स्वामीत्व		स्वभाव
चन्द्र	3		अशुभकर्ता
रवि	4		शुभदाई
बुध	2	5	शुभदाई
शुक्र	1	6	निश्पक्षीय
मंगल	7	12	शुभदाई
गुरु	8	11	अशुभकर्ता
शनि	9	10	शुभदाई

नैसर्गीक स्थाई मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	बन्धु	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
र	बन्धु	...	निश्पक्ष	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
बु	शत्रु	बन्धु	...	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
शु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष	निश्पक्ष	बन्धु
मं	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...	बन्धु	निश्पक्ष
गु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष
श	शत्रु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...

तात्कालिक मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु
र	शत्रु	...	बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
बु	बन्धु	बन्धु	...	शत्रु	शत्रु	बन्धु	शत्रु
शु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	...	शत्रु	बन्धु	शत्रु
मं	शत्रु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	...	बन्धु	बन्धु
गु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	...	शत्रु
श	बन्धु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	शत्रु	...

पंचदा मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	निश्पक्ष	अति बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु
र	निश्पक्ष	...	बन्धु	निश्पक्ष	अति बन्धु	अति बन्धु	अति शत्रु
बु	निश्पक्ष	अति बन्धु	...	निश्पक्ष	शत्रु	बन्धु	शत्रु
शु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	...	शत्रु	बन्धु	निश्पक्ष
मं	निश्पक्ष	अति बन्धु	अति शत्रु	शत्रु	...	अति बन्धु	बन्धु
गु	निश्पक्ष	अति बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	अति बन्धु	...	शत्रु
श	निश्पक्ष	अति शत्रु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	शत्रु	...

शक्तीबल बतानेवाली नामावली शष्टी अंश के आधारपर (दृकबल)

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से अपेक्षित दृष्य गृह

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
शुभ दृष्टी							
बुध	12.06	.	.	.	15.47	32.23	43.60
शुक्र	10.05	.	.	.	11.44	36.26	51.65
गुरु	50.68	.	8.62	10.63	13.65	.	42.72
शुभ बल	72.79	.	8.62	10.63	40.56	68.49	137.97
अशुभ दृष्टी							
चन्द्र	.	-34.98	-39.13	-35.10	-40.67	-22.71	-22.04
रवि	-25.02	.	.	.	-35.69	-10.66	-4.11
मंगल	-8.66	-24.31	-37.27	-39.28	.	.	-3.63
शनि	-37.96	-42.95	-15.00 -55.90	-15.00 -57.91	.	-17.28	.
अशुभ शक्ती	-71.64	-102.24	-147.30	-147.29	-76.36	-50.65	-29.78
दृष्टी पींड	1.15	-102.24	-138.68	-136.66	-35.80	17.84	108.19
द्रिक बल	0.29	-25.56	-34.67	-34.16	-8.95	4.46	27.05

षड्बल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
उच्च बल						
5.09	39.25	21.05	33.61	20.54	28.02	24.55
सप्तवर्गज बल						
97.50	88.13	90.00	56.25	120.00	161.25	63.76
ओजयुग्मरस्यांश बल						
15.00	30.00	15.00	30.00	15.00	0	15.00
केन्द्र बल						
15.00	60.00	15.00	15.00	60.00	30.00	15.00
द्रिखान बल						
0	15.00	15.00	0	0	0	0
संयुक्तस्थान बल						
132.59	232.38	156.05	134.86	215.54	219.27	118.31
संयुक्त दिगबल						
30.88	54.20	19.98	4.18	17.99	45.72	17.25
नतोन्नत बल						
5.67	54.33	60.00	54.33	5.67	54.33	5.67
पक्षबल						
46.64	23.32	36.68	36.68	23.32	36.68	23.32
त्रिभाग बल						
0	60.00	0	0	0	60.00	0
अब्द बल						
0	0	0	15.00	0	0	0
मास बल						
0	0	0	0	0	0	30.00
वर बल						
0	0	0	45.00	0	0	0
होल बल						
0	0	0	0	0	60.00	0
आयान बल						
49.32	31.92	54.03	4.65	59.27	41.14	3.62
युध्ध बल						
0	0	0	0	0	0	0
संयुक्त काल बल						
101.63	169.57	150.71	155.66	88.26	252.15	62.61
संयुक्त चेष्टाबल						
0	0	27.90	18.51	41.39	40.69	49.19
संयुक्त नैसर्गीक बल						
51.43	60.00	25.70	42.85	17.14	34.28	8.57
संयुक्त द्रिकबल						
0.29	-25.56	-34.67	-34.16	-8.95	4.46	27.05
संपूर्ण षड्बल						
316.82	490.59	345.67	321.90	371.37	596.57	282.98

षाढबाला संक्षिप्त टेबुल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
316.82	490.59	345.67	321.90	371.37	596.57	282.98
संपूर्ण शडबल (रूप)						
5.28	8.18	5.76	5.36	6.19	9.94	4.72
मौलीक ज़रूरतें						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
0.88	1.64	0.82	0.97	1.24	1.53	0.94
संबन्धी स्थानक						
6	1	7	4	3	2	5

इष्टफल, कष्टफल की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल	13.66	28.31	24.23	24.94	29.16	33.77	34.75
कष्टफल	35.79	28.66	35.36	33.09	27.10	24.85	19.58

भावापेक्षीत बलवंत स्थिती की यादी (नामावली) शष्टीआंशमें

बुध गृह का प्रकृति संयोग से निश्चित किया जाता है ।

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से भावमध्य की अपेक्षा से गृहों का द्रष्यभाव

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शुभ दृष्टी											
चन्द्र											
11.98	9.13	6.27	3.42	.	.	.	2.13	6.21	10.92	5.05	8.50
बुध											
29.94	7.12	31.39	55.74	37.15	18.56	.	.	.	.	7.85	37.88
शुक्र											
6.48	0.78	9.86	13.43	8.79	4.14	.	.	.	.	2.47	10.48
गुरु											
6.42	20.65	43.46	34.36	1.54 30.00	57.18	38.58	27.18 30.00	15.77 30.00	4.36	.	.

शुभ बल

54.82	37.68	90.98	106.95	77.48	79.88	38.58	59.31	51.98	15.28	15.37	56.86

अशुभ दृष्टी

रवि

-10.73	-7.88	-2.55	-6.30	-12.53	-7.88	-3.23	-0.38	.	.	.	-3.37

मंगल

.	.	-0.14	-3.00	-11.11 -3.75	-5.41	-7.77	-13.96	-11.11 -3.75	-8.25 -3.75	-3.61	.

शनि

.	.	.	.	-2.99	-11.12	-5.44	-0.54	-11.95	-12.91	-8.26	-3.62 -11.25

अशुभ शक्ती

-10.73	-7.88	-2.69	-9.30	-30.38	-24.41	-16.44	-14.88	-26.81	-24.91	-11.87	-18.24

दृष्टी पींड / द्रिक बल

44.09	29.80	88.29	97.65	47.10	55.47	22.14	44.43	25.17	-9.63	3.50	38.62

भावबल की यादी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भावाधीपती का बल											
321.90	345.67	345.67	316.82	490.59	321.90	371.37	596.57	596.57	282.98	282.98	371.37
भावद्रिगबल											
30.00	50.00	40.00	60.00	10.00	10.00	60.00	10.00	50.00	0	40.00	40.00
भावद्रिष्टीबल											
44.09	29.80	88.29	97.65	47.10	55.47	22.14	44.43	25.17	-9.63	3.50	38.62
संपूर्ण भावबल											
395.99	425.47	473.96	474.47	547.69	387.37	453.51	651.00	671.74	273.35	326.48	449.99
भावबल के रुप											
6.60	7.09	7.90	7.91	9.13	6.46	7.56	10.85	11.20	4.56	5.44	7.50
संबन्धी स्थानक											
9	8	5	4	3	10	6	2	1	12	11	7

मौढय स्थिती का विवरण।

जब कोई गृह सूर्य के निकट आता है तब वह मौढ्य स्थिती प्राप्त करता है। मौढ्य दशा में गृह अशुभकारी स्थिती उत्पन्न करता है।

इस जन्मकुंडली में कोई भी गृह मौढ्य स्थिती में नही है।

ग्रहयुध्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्यग्रह जब भी एक रेखांश से ज्यादा समीप आते हैं तो ठग्रहयुध्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुध्ध में जय-पराजय के बारे में अलग-अलग विचार धार बनी रही है। उसकी एक झलक इस प्रकार है।
अन्य के बिच उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजई बनते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुध्ध में झुटा नहि है।

उत्थान, क्षीण, मौढ्य, युध्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

गृह	श्रेष्ठतम स्थिती।/ क्षीण या नाजुक स्थिती	संयोजन	ग्रहयुध्ध	विपरीत परिस्थिती	बालादि अवस्था
चं					युवावस्था
र					कुमारावस्था
बु					वृदावस्था
शु					वृदावस्था
मं					बालावस्था
गु					बालावस्था
श				विपरीत परिस्थिती	मित्रवस्था

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। लेकिन विशेष, दूसरे योग जो हैं वह गृहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते है तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

राज योग

लक्षण:
प्रथम और पंचम भाव के अधिपति एक दूसरे के दृष्टि में है ।

इस जन्मकुण्डली में अत्यधिक शक्तिशाली राजयोग दिखाई पडता है ।

आप शक्ति और अधिकार पद तक पहुँच जाएगों ।

सदसन्चार योग

लक्षण:
लग्नाधीपती चनायमान राशी में रहै है।

आप सदा सक्रिय और चलायमान हैं। आपके कार्य क्षेत्र में सफर ज़्यादा रहेगा। आप अपने निर्धारित लक्ष्य को सदा ध्यान में रखें ताकि आप कहीं भटक न जायें।

द्विगृह योग

लक्षण:
दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
बुध,शुक्र , नवमा भाव में है ।

धर्म और धार्मिक विषयों में आपको विशिष्ट दिलचस्पी होगा । आप हमेशा शान्त रहने वाला है । आप संगीत और अन्य कला का आनन्द लेने के लिए समय बिताएगों । आप विनीत होकर बाते करने में हमेशा ध्यान रखते है । आपको सम्पति और समृद्वि - प्राप्त होगा ।

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

व्यक्तित्व, शारीकि बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्वि को सूचित करता है ।

लग्न स्थान में वृषभ राशी है, याने आपका जन्मलग्न वृषभ है। मानसिक बोझ से बुद्धि का प्रयोग करने वाले कार्यों में उलझने की संभावनायें दिखाई देती हैं। स्वजनों से अपमानित होंगे। मित्रों से बिछड़ना पड़ेगा। आयुध उपकरण का उपयोग करते वक्त अति सावधान रहना होगा। वृषभ लग्नवाले व्यक्ति शुक्र प्रधान होते है। विपरीत योनि से अधिक पटती है। आप दिल के साफ और वाणी के स्पष्ट हैं। चेहरे पर हंसी की प्रभा सदा छाई रहती है। विपरीत योनि के मित्रों से बात-चीत करने में सावधानी न बरती गई तो लोग आपको गलत भी समझ सकते हैं।

विवाह के बाद धन की प्राप्ति विशेष होगी। अनेक प्रकार के गहने प्राप्त होंगे। बड़े बड़े कारखानों के मालिकों के साथ संबन्ध स्थापित होंगे। आप सदा प्रसन्न चित्त रहने वाले आनन्दी स्वभाव के व्यक्ति माने जायेंगे। ३६ से ४२ वर्ष की आयु के मध्य भाग्योन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

कन्याराशि पाँचवे स्थान पर रहने के कारण प्रौढ़ उम्र की और श्रेष्ठ स्वभाव की स्त्री से सहयोग प्राप्त होगा। वह आभूषण प्रिय और पतिव्रता स्वभाव की होगी। शिक्षा में आपकी अभिरुचि होगी।

कुँभराशि दसवें स्थान पर होने से आप किसी से धोखा नहीं खा सकते। कोई धोखेबाज़ आपके संपर्क में आ गया तो बच भी नहीं सकता। आप उसकी ठीक खबर लेने वाले हैं। आप स्वभाव से विनयशील और कार्यकुशल हैं इस
कारण अच्छी प्रगति कर पायेंगे। आप मधुरभाषी हैं और मुंह से अर्थगर्भित बातें ही निकलती हैं। भाग्य और व्यवसाय पक्ष में सफलता मिलती रहेगी।

नगद का लेन देन हो, तो अति जागृति और सावधानी से कार्य निपटाना आपके लिए आवश्यक है। अन्य दुराग्रही व्यक्ति आप से असंतुष्ट रहेंगे। आपके पास कोई बड़ी नगद रकम उपलब्ध हो तो कोई व्यापार में लगाने के बदले बचत योजनाओं में लगाना उचित होगा। इस कारण अनेक लाभदायी संदर्भ आपके हाथ से निकल जायेंगे। फिर भी आपकी संपत्ति बच जायेगी। जो है उसका व्यय होने से बचेगा। आर्थिक स्थिति में स्थिरता जारी रहेगी। फिर भी अन्य अलग दिशाओं से संपत्ति लाभ होने की संभावनायें दिखाई देती हैं। जीवनकाल के १७,२१,२४, ३३,५० और ५५ वाँ वर्ष अति प्रधानता रखते हैं। इस समय ज़्यादा जागृत और सतर्क रहना आवश्यक है।

लग्नाधिपति नवमें स्थान पर है। अन्य लोगों से सहयोग और आनन्द प्राप्त होगा। भाग्य सदा आपको साथ देता रहेगा। आप मधुरभाषी हैं और यह आपकी एक विशेषता है। पिता के माध्यम से भाग्योदय संभव है। हर कार्य में सफलता आपका साथ देगी। सही अर्थ में आप भाग्यवान ही हैं। लोकप्रियता, धर्मनिष्ठा, चतुरता और वैभवता के साथ-साथ स्त्री-पुरुष का सुख भी उत्तम प्राप्त होगा।

मंगल प्रथम स्थान पर रहने से शरीर के किसी भाग में छोटी-मोटी निशानी प्राप्त होगी। हर जगह व्यवहार कुशलता से कार्य करने में निपुण हैं। आप स्वभाव से कुछ क्रोधी भी हैं।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरे भावाधिपति के नव में स्थान पर रहने से संपत्ति, बुद्धिमता, कार्यकुशलता, धैर्यशीलता इत्यादि गुणों से संपन्न होंगे। बालावस्था में स्वास्थ्य संबन्धी कोई समस्या का सामना करना होगा। समय के बीतने पर स्वास्थ्य में सुधार होगा। धार्मिक और पुण्य स्थलों पर जाने की संभावना है। सब प्रकार के भौतिक सुख प्राप्त होंगे। वाहन की सवारी सदा सावधानी पूर्वक करें। जीवन में एकाध बार दुर्घटना का सामना करना अनिवार्य सा जान पड़ता है।

ऐसा देखा जाता है कि शुक्र गृह दूसरे देव से संयोग है । आपको साहित्य कला और लेखाचित्र कला में दिलचस्पी होगा । आप द्वारा किए गए कार्यों में भावुकता और उत्तेजन होगा ।

भाई/बहन

जन्मकुण्डली में उपस्थिति केन्द्र, त्रिकोंण था उच्च भाव में यह सूचित करता है कि अपने भाई - बहन, धैर्य और बुद्वि को सूचित करता है ।

तीसरे भावाधिपति के छठे स्थान पर रहने से स्वजनों से शत्रुता उत्पन्न होगी। वह अपने परिवार का अंग भी हो सकता है। धन-संपत्ति के नाश की सूचना है। मामाजी के साथ के संबन्ध को जाग्रतापूर्ण स्थिति से देखना बुद्धिगम्य होगा। मामा-मामी के कारण अपयश मिल सकता है। आवश्यकता से अधिक संपर्क न बढ़ाना ही लाभप्रद होगा।

शनि तीसरे स्थान पर रहा है। इस कारण अपने जीवनसाथी से ज़्यादा प्रेम की अपेक्षा निराश होने का कारण बनेगी। आपके आहार-विहार तथा व्यवहार के प्रति अनेक आक्षेप होंगे। कीर्ति और संपत्ति प्रदान होगी। आप दीर्घायु जीवन बितायेंगे।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपके जन्मपत्रिका में चौथे भाव का स्वामी दसवाँ स्थान स्वीकारता है। आप जैसे प्रयत्नशील पुरुष को सफलता प्राप्त होने की संभावना है। रसायनों में आपके विशेष रुचि रहेगा। रासायनिक वस्तु के निर्माण में, मिश्रण कार्य में और धंधे में उन्नति प्राप्त हो सकता है। आप श्रेष्ठ व्यक्तित्व संपन्न पुरुष हैं। अपने शत्रुओं को आप सरलता से पहचान लेते हैं। संपन्न स्थान और मान का संरक्षण करने के कार्य में कुछ ज़्यादा ही जागृत रहना होगा।

चौथे भाव का मालिक राजकीय स्वभाव युक्त सूर्य है। हर कार्यक्षेत्र में आडंबर और आदर प्रकट करने के आदि हैं। आप को अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। आपकी कार्यशक्ति के प्रति लोग सम्मानपूर्ण दृष्टि से देखेंगे। इस कारण स्वयं अपने को भाग्यवान समझनेवाले पुरुष हैं। अधिकार संपन्न व्यक्ति हैं।

चन्द्र दुष्ट ग्रहों से प्रभावित है। इस कारण मातृ सुख और मानसिक स्वस्थता के लिए आपको प्रयास करना होगा।

बच्चे, मन, बुद्वि

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव बच्चे, मन और बुद्वि को सूचित करता है ।

पाँचवां भावाधिपति नवमें स्थान पर रहने के कारण साहित्य में, साहित्य रचने के कार्य में और समाचार पत्र आदि के प्रकाशन कार्य में अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। संतान के माध्यम से और लेखन के कार्य से अतुलित कीर्ति अर्जित कर सकेंगे।

लग्न से लेकर पाँचवी भाव में शुभ गृहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरु था शुभ गृह जो इस भाव से प्रभावित है, बच्चों के जन्म के लिए उचित माना जाता है । ऐसे उचित सूचनाएँ को इस जन्मकुण्डली में दिखाया गय है

रोग, शत्रु , मुसीबतें

छठा भाव रोग, शत्रु और विधों को सूचित करता है ।

चन्द्र छठ्ठे स्थान पर रहा है। सामान्य आयु के मालिक हैं। उदर रोग बार-बार सतायेगा। आप जीवन में समझौता नहीं कर पायेंगे। आप सहनशीलता में कच्चे रहे हैं। सर्दी जुकाम संबन्धी बीमारी से बचकर रहना लाभप्रद होगा।

राहु छठ्ठे स्थान पर रहा है। वह संपत्ति का मालिक है। दीर्घ आयु का जीवन प्राप्त है। चर्मरोग के लक्षण प्रकट होते ही तुरन्त डाक्टरी इलाज करना बुद्धिगम्य माना जायेगा। प्रणय संबन्ध से दूर रहना अच्छा होगा। क्योंकि उसमें संतोष कम और दुःख ज़्यादा प्राप्त होगा।

छठ्ठा भावाधिपति के नवमें स्थान पर होने से कार्यक्षेत्र में प्रगति और गिरावट दोनों का अनुभव होता रहेगा। बिल्डिंग मेटिरियल, भवन निर्माण और पैतृक व्यवसाय के माध्यम से लाभ प्राप्त करना सरल होगा। जीवन साथी के भाई-बहन के स्वास्थ्य की चिन्ता होना संभव होगी। अथवा उनसे मन मुटाव हो सकता है।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति प्रथम स्थान पर है। किसी परिचित व्यक्ति के साथ अथवा पूरी तरह जांच पड़ताल करने के बाद विवाहित होने की संभावना है। आपकी पत्नी बुद्धिमति, कार्यकुशल और विवेकपूर्ण स्त्री होगी। आप कौमार्यकाल से ही सौन्दर्यवान बालिकाओं से आकर्षित होंगे। जीवनसाथी की पसंद में सौन्दर्य एक कारण बनेगा। आप संकुचित मनोभाव के व्यक्ति हैं, ऐसे आरोप के शिकार बनेंगे। स्वास्थ्य के संरक्षण के लिए और उत्साहपूर्ण कार्यों के लिए पत्नी का सहयोग अनिवार्य बनेगा। पत्नी से मिला हुआ सहकार और सहयोग जीवन की सफलता का कारण बनेगा। आप का जन्म श्रेष्ठ परिवार में हुआ है, इस कारण कुल गौरव और कुल महिमा के बखान के आदि हैं। धन संपत्ति के व्यय से बचाने के लिए पति-पत्नी दोनों को सतर्क रहना होगा।

दक्षिण दिशा से उत्तम जीवन संगिनी प्राप्त होने की संभावना रखते हैं।

सातवें स्थान पर गुरु की दृष्टि होने के कारण अनेक दोषपूर्ण फलों में कमी होग । अनेक लाभ भी होंगे।

दीर्घायु , मसीबतें

आठँवा भाव दीर्घायु, बैध्य चिकित्स और मुसीबतों को सूचित करता है ।

आठवाँ भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर रहने से बालावस्था में अनेक मुश्किलों का सामना करना होगा। समय के बीतने के साथ स्थिति में सुधार होगा। आप का आयु औसत आयु से अधिक रहेगी। इस ग्रह की अन्तर्दशा में विभागीय परेशानियों से बचकर रहना ही उचित होगा।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति तीसरे स्थान पर है। साहित्य कार्य से या वृकतत्व कला के माध्यम से या अन्य किसी कलात्मक क्रिया से कोई संस्था से अर्थ संपन्न होने की संभावना है। आप उपरोक्त कला में सफलता प्राप्त करने वाले पुरुष हैं। भाई बहन से सहयोग सुलभता से प्राप्त होगा। 'सहजगते सकृतपतौ रूप स्त्रीबंधु वत्सलः पुरुषः'

आपके नौवे भाव में बुध उपस्थित हैं। इसलिए आपको ऊँची शिक्षा प्राप्त होने का भाग्य प्राप्त है। विद्या, धन, संतान और नौकर चाकरों का सुख सदा प्राप्त होगा। परोपकारी कार्य संपन्न होंगे। दानवीर के नाम से ख्याति मिलना संभव होगा।

नौवे भाव में शुक्र की स्थिति अच्छी होती है। आपके जीवन में हर तरह के सुख प्राप्त होंगे। सुख और समृद्धिपूर्ण जीवन की गरिमा अनुभव होगी। इस कारण आप भाग्यवान हैं। सादा जीवन उच्चविचार के समर्थक होंगे।

नवमा भावाधिपति दुर्बल है। अनेक प्रकार के सद्‌गुणों से वंचित रहना पड़ेगा। भाग्योदय में अड़चने आएगा ।

नवमा भावाधिपति गुरु (बृहस्पति) के सानिध्य में है। अतः अनेक प्रगति का कारण बन सकता है। भाग्येश आपको अनिष्ठों से बचा सकता है। परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होग ।

नीलम माणिक्य अथवा आकाशी रंग के सफायर पत्थर के धारण करने से रोग मुक्ति और कष्ट निवारण में अनुकूलता प्राप्त होगी। आकाशी रंग आपके लिए सदा सद्‌भाग्य का निमित्त बन सकता है। महत्वपूर्ण कार्य निर्वाह के वक्त इन रंगों का सान्निध्य लाभदायी बन पायेगा।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्रेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है ।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए । आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

आप के जन्मकुण्डली में दसवी भाव के स्वामी को तीसरे भाव में स्थान दिया गया है । ब्रिहत्त पारासरा होरा श्लोकों को अनुसार आपको अपने भाईयो का द्वारा संतोष प्राप्त होगा । आप धैर्य शाली और विश्वास रखने वाले है । आप वाग्मी और विश्वस्त है ।

दसवी भाव कुम्भ राशी है । वैज्ञानिक धन्धा, अनुसंन्धान काम, आणविक और नाभिकीय शास्त्र, विदुध शक्ति को यह चिनह् सूचित करता है । आप विदुध, कम्प्यूटर, मोटरगडि, जनित्र, रेलवे, निर्वाहन, धातु, कारखाना, प्रतिरक्षा विभाग और आयुध से सम्बधित उघोग में सफलता पा सकते है । जल निर्वाहन, पुल, कृषि के लिए समुद्र और जल संम्बधी उत्पन्न चीजें आपके लिए उचित उघोग क्षेत्र है ।

आपके जन्मकुण्डली में सूर्य दसवी भाव में उपस्थित है ।
सारावाली के अनुसार सूर्य दसवी भाव में उपस्थित है । आप बुद्विशलि होगा, सुख भोगों का अनुभव करेगा और वाहन को आपनाएगा । आप शक्तिशील, धनिक और धैर्यशाली होगा । आप अपने पुत्र और रिश्तेदारो से खुश रहेगा । यह निश्चय है कि आप जीवन में आगे बढ़कर एक आदरणीय और महत्वपूर्ण पद को संभालेगा । आप अपने पिताजी से लाभ पा सकते है । आपको विविध विषयों पर दिलतस्पी होगा ।

आप एक सामाजिक कर्मचारी, क्षेम अफसर, सुरक्षा अफसर, व्यवसायी संघ के कर्मचारी बन सकते है या कोई भी उधोग जहाँ आपको नई और विभिन्न चीजों के बारे में पढने की अवसर मिले । आप दूसरों की सहायता करते है । आप हमेश कार्यलय में उचित समय के बाद ही पहुँचेगा । आप दूसरों की सहायता करते हुए अपने लिए दिए गए कार्यक्रमों को भूल जाते है ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों के आदार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण विधि नीतियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते है । आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उधोग क्षेत्र निम्नलिखित है ।

वाहन, निर्वाहन, पर्यटन, संगीत, सिनेमा, सजावट, रेफिज़रेटर, पंखा, गरम पानी, सामग्री, गरम वायु धौंकनी, प्रकाश विकिरण, स्त्रियों की पोशाक अभ्रक, नवाने योग्य चीजे, अभ्रक,रबड़, कमाया हुआ चमड़ा,भोजन और नानबाई की दुकान ।

गुरु दसवी भाव के रुप में उपस्थित है । यह आपके अच्छे परिणामों को मजबूत बनाता है ।

आमदनी

ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गें को सूचित करता है ।

ग्यारहवाँ भावाधिपति आय स्थान पर रहने से अपने कार्यक्षेत्र में सुशोभित रहेंगे। हर कदम पर प्रगति ही प्रगति होगी। सुख और विद्वता में आयु के साथ-साथ लगातार अभिवृद्धि होती रहेगी।

गुरु ग्यारहवें स्थान पर रहा है। वफादार मित्रजन की प्राप्ति होगी। यथायोग्य समय आने पर उन लोगों से मदद भी प्राप्त होगी। आप निर्भय और कीर्ति के पात्र हैं। आपका परिवार सीमित रहेगा।

खर्च , व्यय, नष्ट

बारहवी भाव खर्च और नष्ट के बारे में सूचना देते है

बारहवाँ भावाधिपति लग्न स्थान पर रहने से खुले हाथों से खर्च करने के आदि हैं। आरोग्य और स्वास्थ्य में कमी रहने का भ्रम होना संभव होगा। अभ्यास क्षेत्र में ज़्यादा मेहनत करनी होगी। फेफडों की बीमारी की संभावना है। इस कारण सतर्क रहना लाभदाई होगा।

केतु बारहवें स्थान पर रहने से चिंतन कार्य में आप चपल हैं। आप शशक्त मन और आत्मा के मालिक हैं। व्यर्थ के
खर्च करने के आदी हैं।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते है। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

बुध दशा

इस दशा में बड़े लोगों की सहायता प्राप्त होगी। ज़मीन, जानवर, चिड़िया और अच्छे साथियों से आनन्द प्रदान होगा। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण बने रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा कभी कभी हो सकती है। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों के
विकास के लिए यह समय उपयुक्त रहेगा। आप जो स्नातक् हों तो उपरोक्त कार्य से बड़ा लाभ होगा। भवन निर्माण या प्राप्ति होगी। स्त्री-पुत्रादि विषयक फल प्राप्त होंगे।

सप्तवर्गीय गणित में बुध बलवान है। अधिकतर शुभ फल प्राप्त होंगे।

इस दशा में अच्छी शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करने का योग होगा। लिखना, पढ़ना, व्याख्यान (भाषण) देना आदि में पूरा समय लग जा सकता हैं। दूसरे लोग आपके अधिकार में रहेंगे। व्यापारिक कार्यों में एक मध्यवर्ती होकर अच्छा लाभ प्राप्त होगा। किसी वस्तु के उत्पादन के एजेंट होकर या किसी प्रकाशन से अच्छी आमदनी मिलने की संभावना है। मित्रों और रिश्तेदारों की सहायता मिलेगी। उत्तर की ओर यात्रा संभव है और खूब धन कमाने का योग है। युवा लोगों के परिचय से भी अच्छा लाभ प्राप्त होगा। लेखन-प्रकाशन का काम भी लाभदायक

रहेगा।

∇ (14-06-2020 >> 20-04-2021)

बुध दशा में सूर्य के अपहार में आप आसानी से अपने लक्ष्य पर पहुँच पायेंगे। यह काल आपके मित्रों तथा संबन्धियों के लिए अच्छा न रहेगा। इच्छानुसार लिए गये कार्यों में सफलता मिलेगी। आप कई सामाजिक कार्यों में उपस्थित होंगे। यात्राएँ सुविधा जनक होगी। वाहन योग लभ्य है। कर्मक्षेत्र में आप का स्थान ऊँचा रहेगा। प्रगति प्राप्त होगी। सामुदायिक मांगलिक कार्यों में सम्मिलित होना पड़ेगा। राजकार्य में सफलता की आशा कर सकते हैं।

∇ (20-04-2021 >> 20-09-2022)

बुध दशा में चन्द्र के अपहार में चर्म रोग की संभावना है। आप के शरीर में कोई विशेष रंग देखा जाय तो तत्काल डाक्टरी जाँच करवानी चाहिए। आप को पशुओं तथा पक्षियों के प्रति विशेष अनुराग उत्पन्न होगा। उनके निकट का सहयोग खतरा पैदा कर सकता है। इस समय सवारियों से भी कोई दुर्घटना होने की संभावना है। नेत्र रोग की संभावना है। वाहनों से सावधान रहें।

∇ (20-09-2022 >> 17-09-2023)

बुध दशा में मंगल की अन्तर्दशा में सिर संबन्धित कोई समस्या उत्पन्न हो सकती है। वर्तमान स्थल बदलना पड़ेगा। चोरों का आतंक अधिक हो सकता है। यह जाग्रत रहने योग्य काल है। चोट या रोग से पीड़ा हो सकती है। सावधान रहना सुरक्षा कारक होगा।

∇ (17-09-2023 >> 05-04-2026)

बुध दशा में राहु की अन्तर्दशा में आप शत्रुओं से घिरे रहेंगे। उनके क्रूर कृत्यों का शिकार बनना पड़ेगा। अप्रतिक्षित आक्रमण का निशाना बनना पड़ेगा। बावर्ची खाने में गैस के चूल्हे से या बिजली से संचालित चूल्हे से सावधान रहना योग्य होगा। बिजली के अन्य उपकरणों से भी सावधान रहें। अग्निमय का भी खतरा है। जागृत रहें। रात को अन्धेरे में यात्रा करना योग्य न होगा। अभ्यास क्षेत्र संतृप्त रहेगा। धन की वृद्धि होगी।

∇ (05-04-2026 >> 11-07-2028)

बुध दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा में आपके भाग्य का उदय होगा। आप को शारीरिक एवं मानसिक योग्यता तथा शक्ति प्राप्त होगी। आदरणीय लोगों से सम्मान प्राप्त होगा। इससे आपका ऐश्वर्य बढ़ेगा। चारों ओर से प्रशंसा प्राप्त होगी। विवाह के अनेक श्रेष्ठ अनुरोध प्राप्त होंगे। मांगलिक विवाह कार्य के लिए यह योग्य समय रहेगा। संपत्ति वृद्धि का भी योग है।

∇ (11-07-2028 >> 21-03-2031)

बुध दशा में शनि की अन्तर्दशा में आप को वैयक्तिक और स्वाभाविक कई परिवर्तन अनुभव होंगे। दुराग्रही बनने की संभावना रखते हैं। मन धन उपार्जन के लिए लोलुप बन सकता है। उदासी के कारण अन्य प्रधान कार्यों में आपका ध्यान कम होगा। अन्यायपूर्ण कार्यों के प्रति मन आकर्षित होगा। सावधान रहना अच्छा होगा।

केतु दशा

इस दशा में मानसिक शान्ति कम होगी। मुसीबतें आती रहेंगी। मन का नियन्त्रण करना आवश्यक है। नहीं तो मानसिक विषमताओं में

पड़कर निराश होने की संभावना है। शरीर व मन को दृढ़ करने के लिए किसी दवा आदि का लेना अच्छा होगा। समय समय पर कई समस्याएँ आपके सामने आयेंगी। अपवाद और शंका का शिकार होने की संभावना भी है। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए डाक्टरों को दिखाना और उनकी सलाह के अनुसार उपचार करवाना अच्छा है। केतु अच्छे स्थान पर रहता है तब धन, पारिवारिक सुख आदि देनेवाला होता है। इस दशा में गरीबी, बुद्धिशून्यता और शारीरिक अस्वस्थता साधारण होगी। बालावस्था में यदि केतु दशा आती हैं तो शिक्षण कार्य में अनेक बाधाएं आती हैं। आपकी आयु यदि जीवन के पूर्वार्ध काल व्यतीत कर चुकी है तो, किसी बंधु से बिछड़ना या वंचित होना संभव होगा। हर समस्या से बचना कठिन है। मानसिक बोझ और मनोव्यथा अनुभव होने की संभावना है। इस दशा का पूर्व ज्ञान होने पर कुछ कठिनाइयों से बच सकते हैं। भक्तिपूर्ण जीवन से मानसिक शाँति प्राप्त होगी। महिलाओं के निमित्त अन्य लोगों से संबन्ध बिगड़ सकते हैं। मानहानी, धन नाश और दाँत का दर्द सर्वसाधारण होगा। कुछ समय बाद असाधारण संपत्ति सुख और चारों ओर आनन्दपूर्ण वातावरण की प्रतीक्षा कर सकते हैं।

∇ (21-03-2031 >> 18-08-2031)

केतु की दशा में उस के अपहार में आप को कई असुविधाओं का सामना करना पड़ेगा। अनेक समस्या उठ खड़ी होगी। अपराध थोपा जायेगा। असत्य मुकद्दमों का सामना करना पड़ेगा। सरकारी एजेन्सी से सहायता के बदले तकलीफें सहनी पड़ेगी। अयोग्य व्यक्तियों की संगति असहनीय हो जायेगी। पर आप का मानसिक संतुलन जारी रहेगा।

∇ (18-08-2031 >> 17-10-2032)

केतु की दशा में शुक्र के अपहार में छोटे कारणों को लेकर दूसरों से झगड़ा होता रहेगा। त्रुता उत्पन्न होगी। आपको अपने सहयोगी से भी अलग होने का विचार होगा। आप पर कोई आपत्ति आना संभव है। इसलिए सतर्क रहना आवश्यक है। आग से बचते रहें। सावधानीपूर्ण संयम से जीवन बिताना लाभदायक रहेगा।

∇ (17-10-2032 >> 21-02-2033)

केतु की दशा में सूर्य के अपहार में ऊँचे अधिकारियों की प्रतिकूलता प्राप्त होगी। आप पर कड़ा नियन्त्रण रखा जायेगा। कोई न कोई विशेष अधिकार से वंचित किया जायेगा। अकारण दंडित होना पड़ेगा। ज्वर से पीड़ित होना पड़ेगा। पर विदेश में रहने पर आपकी भलाई रहेगी। विदेशागमन की संभावना है।

∇ (21-02-2033 >> 23-09-2033)

केतु की दशा में चन्द्र के अपहार में आपकी आय दुगुनी होगी। व्यय भी उसी रूप में बढ़ेगा। आपको सुख और दुःख दोनों का मिश्रणयुक्त अनुभव होता रहेगा। आप अपने पुराने अच्छे मित्रों का वियोग महसूस करेंगे। शिक्षा से आपकी उन्नति होगी। स्वजनों से दूर रहना पड़ेगा।

∇ (23-09-2033 >> 19-02-2034)

केतु की दशा में मंगल के अपहार में परिवार तथा साथियों से मतभेद होना संभव है। दुःखपूर्ण वातावरण का सर्जन हो सकता है। दुष्टों का उपद्रव बढ़ सकता है। जाग्रत न रहने से दुःखी होना पड़ेगा। सजग रहना बुद्धिगम्य माना जाता है।

∇ (19-02-2034 >> 09-03-2035)

केतु की दशा में राहू का अपहार अच्छा नहीं रहेगा। आप अपना अधिक समय प्रार्थना एवं ध्यान में लगाकर अयोग्य कार्यों से बचते रहियेगा। आप के सभी कार्य गलत तथा निषेध रूप में लिए जाएँगे। अकारण झगड़े उत्पन्न हो सकते हैं। इस कारण जाग्रत रहना अनिवार्य है। स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना अनिवार्य है।

∇ (09-03-2035 >> 13-02-2036)

केतु की दशा में बृहस्पति का अपहार आपको श्रेष्ठ व्यक्तियों से मिला देगा। यह आपकी भलाई का कारण बन सकता है। अनेक व्यक्ति आप के सहवास की इच्छा करेंगे। परिवार में एक बच्चे के पैदा होने का योग है। पहले निषिद्ध हुए आदर तथा मान्यता अब आपको प्राप्त होगी।

∇ (13-02-2036 >> 24-03-2037)

केतु की दशा में शनिचर के अपहार में आपको स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा। अच्छा खाना तथा व्यायाम नियमित रूप से लेना होगा। आपको लंबी यात्राएँ करनी पड़ेगी। प्रगति सुनिश्चित है। वात पित्त का प्रकोप संभव है।

∇ (24-03-2037 >> 21-03-2038)

केतु की दशा में बुध के अपहार में आप शरीर और मन से उत्साही होते रहेंगे। अनेक स्नेही मित्र प्राप्त होंगे। आर्थिक लाभ होता रहेगा। शारीरिक अस्वास्थ्य तथा पीड़ाएँ कम होगी। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा स्थान प्राप्त होगा। नये व्यक्तियों से मिलना जुलना होगा।

शुक्र दशा

पहले किए हुए अच्छे कार्यों से इस दशा में सुख-सुविधा और समृद्धि प्राप्त होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कलाओं में विशेष रुचि होगी। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति इस दशा में हो जायेगी। अच्छे कर्मों का अच्छा फल आपको मिलेगा। भिन्न भिन्न सवारियों से कई स्थानों की सैर का आनन्द आपको मिलेगा। कभी कभी दूसरे लोगों की ईर्ष्या भी आप के लिए बाधा बनेगी। संबन्धियों से अलग रहना पड़ेगा। कभी कभी मन की अशान्ति भी अनुभव होगी। विवाह के युक्त आयु होने पर ही जीवन साथी चुनने का योग्य समय माना जा सकता है। पत्नी समेत आनंदमय जीवन व्यतीत होगा। आयु अनुसार सुखद दांपत्य जीवन और संतान प्राप्ति का योग है। दुष्ट व चरित्रहीन व्यक्तियों से दूर रहना ही उचित होगा। सम्मान मिलेगा।

∇ (21-03-2038 >> 21-07-2041)

शुक्र में शुक्र कि अन्तर्दशा के दौरान आपके परिवार मे विवाह या सगाई जैसे शुभ कार्यो के संकेत हैं। जमीन खरीदने और घर बनाने के लिये अच्छा अवसर हैं। अपने रचनात्मक कौशल्य का उपयोग किया जा रहा हैं, इसका आपको अनुभव होगा। आप समाज में काफी लोकप्रिय बनेंगे।

∇ (21-07-2041 >> 21-07-2042)

शुक्र दशा में सूर्य कि अन्तर्दशा, पेट से संबंधीत कुछ बिमारियां उत्पन्न हो सकती हैं। आपको अपने खाने कि आदतों में अधिक सतर्कता सुनिश्चित करें। इस समय आपको काफि वास्तववादी बने रहना होगा, अन्यथा आप कोई मुर्ख निर्णय लेंगे और बादमें आपको पछताना पडेगा। आपके उपर काफि प्रतिबंध होने के कारण आप नाखुश रह सकते हैं।

∇ (21-07-2042 >> 21-03-2044)

शुक्र दशा में चंद्र कि अन्तर्दशा के दौरान आपको हड्डी से संबंधीत परेशानियां हो सकती हैं। फ्रॅक्चर्स या अन्य हड्डी से संबंधीत अन्य कोई परेशानियां होने कि संभावनाऐं हैं। आपको यात्रा करना पसंद है लेकिन आपका परिवार इस बात से नाखुश हैं। झुठ को साबित करने कि आपकी प्रवृत्ती दिखाई दे सकती है और आप अधीक साधन संपन्न बनेंगे।

∇ (21-03-2044 >> 21-05-2045)

शुक्र दशा में मंगल ग्रह कि अन्तर्दशा आपको किसी व्यक्ति और स्थिती पर संदेह करने कि प्रवृत्ती प्रदान कर सकती हैं और अवांछित मुद्दे पैदा कर सकती हैं। आप विघातक ना करने कि सुनिश्चिती करें ताकीं आपके रवैये में गलतफहमी ना रहें। इससे और इसके विकास के माध्यम से आपको लाभ मिलेगा।

कुजदोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को महत्वपूर्ण द्रष्टी से देखा जाता है। मंगल या कुज विवाह संबन्धी कार्यों पर अपना प्रभाव डालने वाला होता है। जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगलकारी या दोषयुक्त माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका प्रभाव खास कारण से क्षीण हो जाता है या अप्रिय हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में प्रथम स्थानपर रहा है।

यह स्थिती दोषपूर्ण है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की अपेक्षा मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

इस जन्मकुंडली में मंगल का दोष दिखाई देता है।

स्पष्टीकरण

आपका जोशपूर्ण स्वभाव आपको चुनौती का सामना करने में मदद कर सकता है। आप अच्छा पैसा कमाएंगे और आपके साहसी और कार्यक्षम स्वभाव सें आपका परिवार जीवन सुखी होगा। आपकें कार्य के प्रती हमेशा चतुर रहें। अगर आप विचार सें पेश नही आते तो आपका साहसी स्वभाव और आपकी उर्जा सें संकट आ सकते है। आपके परिवार जीवन कें भीतर तथा बाहर कें विवाद टालने हेतू आपने गुस्सा काबू करना चाहिए। आप सभी परिस्थीतीयों में ताकदवर रहे सकते है। साथी कें साथ जुडे रहना और प्यारे इन्सान कें साथ अडचणों पर चर्चा करना इससे आपकों मदद मिलेंगी। निजी आनंद पर कम ध्यान देने सें आप खुश इन्सान बन सकते है।

उपचार

प्रथम घरकें कुज कें अशुभ परिणाम कम करने हेतू, आप निचे दियें उपाय कर सकते है

बुधवार के दिन भगवान विष्णू और भगवान सुब्रह्मण्यमको अर्चना अर्पण करें। ४५ हप्तों तक अर्चना एकसाथ कायम रखें। एक महिनें में विष्णुसहस्त्रनाम का एक बार और सुब्रहमन्यभूजंग का पांच बार पठन करें। नवग्रह देवताओं के मंदीर जाकर कुज के लिये दों तेल के दिये जलाऐं और बुध के लिये पांच तेल के दिये जलाऐं। जब कभी भी आपको संभव हों तब यह क्रिया करें। भक्ति के साथ सभी उपचारात्मक उपायों को पुरा करें।

राहु दोष और केतु दोष

राहु और केतु अस्पष्ट ग्रह है। उनकी ग़ति परस्पर संबंधित है और एकही अंग के भाग होने के कारन सभी समय वह एक दुसरों कें विरूद्ध है किन्तु दृष्टि सें विचार करते हुए, वह एक दुसरों सें संबंधित है।

सामान्य रूपसें, राहु सकारात्मक है और गुरूकें प्रती लाभदायी है और इसलिए वह विकास और स्व-मदद कें लिए कार्य करता है और केतु बंधन और शनीकें विघ्न दर्शाता है और इसलिए विकास में बाधा लाता है। इसप्रकार, राहु सकारात्मक उद्देश्य दर्शाता है और केतु विकास की सहज संधि दर्शाता है।

इसलिए, राहु भौतीकवाद और इच्छा सूचित करता है, तथा केतु आध्यात्मिक प्रवृत्ति और भौतीकवाद क़ी सुक्ष्मता प्रक्रिया दर्शाता है। राहु को कपट, धोखा और बेईमानी कें लिए माना जाता है।

राहु दोष

आपकी जन्मकुंडली में राहु दोष नही।

राहु दोष कें उपाय

आपकी जन्मकुंडली में राहुदोष न होने सें, आपने कुछ उपाय करनें की जरूरत नही।

केतु दोष

आप अच्छी तरीके सें खर्चा करके पैसो के बारे में स्थिरता पा सकते है। पैसा कमाना और परिवार को सुख देना आपके लिए कठीन नही। विनयशील रहने सें कभी-कभी बुरा समय और नुकसान हो सकता है। आप अडचनें और ऋण पर दृढता सें जीत पा सकते है। साथी से अनुभव बाटने सें मन की शांती और कार्य अच्छे होगे। आपने बुरी संगत और परिणाम सुखी और स्वास्थ्य जीवन हेतू टालने चाहिए। आपकों आखें छोड के शरीर के उपरी भाग के विकार हो सकते है। पेट का निचा भाग और प्रोस्ट्रेट भाग की परवाह करें.

केतु दोष हेतू उपाय

केतु दोष के बुरे परिणाम कम करने हेतू, आप निचे दिये उपाय कर सकते है।

सफेद कपडे की बॅग में कुछ ग्राम चना लें और सोने से पूर्व उसे तकिए के निचे रखे। आपने वह सुबह उठकर कौवे को डालने चाहिए। ऐसे लगातार ९ दिन करें, और अंतीम दिन भगवान गणेशजी के मंदीर में शाम में दर्शन लें । स्वेच्छा सें दान करकें परिक्रमा करें।

केतुकवचयंत्र लेकर समर्पी त भाव सें पहने।

केतु कें लिए आराधना देवता - भगवान गणेश और हनुमान. उनकें मंदीर में दर्शन लेके स्वेच्छा सें दान करें।

घरमें सुदर्शन चक्र रखे और केतु दोष के परिणाम कम करने हेतू निचे दिया श्लोक पढें।

अस्मिक मंडले अधिदेवता
प्रथ्याधिदेवता साहिथम
केकीग्रम धयायामि आवाहायामी

श्रीं ॐ नमो भगवती श्री शूलिनी
सर्व भुतेश्वरी ज्वाला ज्वाला मायी सुप्रदा
सर्व भूतादि दोषाया दोषाया
केतुरग्रह निपीडीताथ नक्षत्रे
राशोजाथाम सर्वनाम मम
मोक्ष मोक्ष स्वाः

नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने स्वाति नक्षत्र में जन्म लिया है आपका नक्षत्र अधिपति राहु है । आप हमेशा स्वतंत्र रुप से चिन्ता करने वाले है । इसलिए आपको मुसिबतों का सामना करना के लिए परेशानी होगा ।
जन्म नक्षत्र के आधार पर कुछ गृहों का दाश आपके लिए प्रतिकूल होगा । स्वाति नक्षत्र होने के बावजूद शुक्र, केतु और सूर्य दाश में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस समय आपके चेतना, विचार और प्रवृत्ति में अनेक प्रकार का प्रत्यक्ष परिवर्तन दिखाई पड़ेगा । वैवाहिक विषयों में अप्रत्याशित रुकावट उत्पन्न होगा । अपने आपको क्रोध का पात्र न बनाए । इस समय लाभहीन चीजो की ओर असाधारण रुप से ज्यादा झुकाव होगा ।

तुला राशी जन्म राशी का अधिपति शुक्र है । ऐस परिस्थिति भी होग जब आप सौदर्य शास्त्र और अपने कार्य क्षेत्र में अपना मुद्रंकित कर लेगें । आपके भाग्य और उन्नति रिशतेदारों के बीच प्रशंसा प्राप्त करने के लिए बहुत अधिक समय लेगेग । अनुराधा, मूल,उत्तरा अषढ़ा ,और कृत्तिका(मेष राशी), रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र (ऋषभ राशी) सामान्य रुप से अनुकूल नहीं होगा ।

इस प्रतिकूल दाश में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यतः विरुद्व नक्षत्रों पर । अनावश्यक झगड़ो से दूर रहने की कोशिश करें । इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे ।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादों की प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते है ।

प्रतिकूल दाश के समय राहु और सूर्य देव की प्रार्थना करना लाभदायक है । श्रेष्ठतम परिणाम के लिए स्वाती जन्म नक्षत्र के दिन और सम्बधित नक्षत्र जैसे शताभिषा और पूर्व अषढ़ा के दिन भगवान की प्रार्थना करना चाहिए । जिस शुकवार को स्वाती नक्षत्र आता है, उस दिन उपवास रखना अत्यधिक शुभकारक है ।

अच्छे परिणाम प्राप्त होने के लिए रोज नक्षत्र का अधिपति राहु का प्रार्थना करना चाहिए । उचित जगह पर अर्जुन वृक्ष को लगना लाभदायक है । सफेद, काला और नीले रंग के वस्त्रों को पहनना राहु और शुक्र को प्रसन्न करने का दूसरा मार्ग है ।

इसके अलावा शुक्र गृह के अधिपति को प्रसन्न करने का लक्ष्य लाभदायक है ।

स्वात्ति नक्षत्र का देव वायु है । वायु भगवान को प्रसन्न करने के लिए और अच्छे परिणाम के लिए इनमें से किसी मंत्र को विश्वास से अलापन करना चाहिए।

१ ऊँ वायो ये ते सहश्रिणे
रत्तास्सतेभीरागही नित्युत्वान् सोम पीतये

२ ऊ वायेव नमः

इसके अलावा, जानवरों,पक्षियों और पेड़ो का संरक्षण करना शुभकारक है । मुख्यतः स्वात्ति का जानवर बैंस का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपके जीवन में ऐश्वर्य और समृद्दि प्राप्त होगा ।स्वात्ति का औधोगिक पेड, अर्जुन पेड और उसके शाखओं को काटना नहीं चाहिए और औधोगिक पक्षी , कौआ को पीड़ा नहीं देना चाहिए ।स्वात्ति नक्षत्र का मूलतत्व अगनि है । अगनि देव की पूजा करने से और दिया जलाने से इस जन्म नक्षत्र के लोगो को भाग्य प्रधान करेगा

दाश परिहार

दश के हानिकारक प्रभावो का परिहार

हर गृह के दाश में भाग्य और निर्माग के सामान्य झुकाव जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों पर आधारित है । गुणकारक और हानिकारक गृहों का प्रभाव यह सूचित करता है कि कुछ दाश समय आपके लिए अनुकूल नही है । प्रतिकूल दाश समय के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का आचरण करना पडेगा ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित प्रतिकूल दाश समय और उसके लिए किए जाने वाले धार्मिक विधियों के बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

दशा :केतु

आपका केतु दाश 21-3-2031 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र स्वाति है । प्ऌठ्ढ्ण केतु भाव में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृह स्थानो के अनुसार आपको प्रतिकूल परिस्थितियों से गुजरना पडेगा । जिस जोखिम में आप शमिल हो,जीत के लिए आप डरते रहेगों । इस समय आपके कल्पनाशील अर्न्तज्ञान सभी जगह अपूर्ण हो जएग । क्योंकि यह आपके चिन्ता एकाग्र करने की योग्यता पर प्रभाव पड़ेगा, आपके समझने कि शक्ति भी कम हो जाएगा ।

केतु दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब केतु कमजोर है प्रतिकूल निर्णय लेने की झुकाव होगा । अपनी आवशायकता को पूरा करने के लिए आपको दूसरो पर निर्भर करना पड़ेगा । स्वंय रक्षा की आवश्यकता को आप कम मूल्य देगों ।

आप इस समय पूर्वकाल में जीना चाहते है । अपने कार्यो में एकान्त बनाए रखने की कोशिश करना चाहिए । आपका शरीरिक उष्णा अधिक हो जाएगा ।

आपको पचाने से सम्बधित रोगें का अनुभव होगा ।यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए ।

जब केतु प्रतिकूल स्थान पर है तो आपको दूसरों की जायदाद उपयोग करने का झुकाव होगा । वैवहिक जीवन कायम रखने के लिए आपको संघर्ष करना पडेगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि केतु प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें केतु को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है । और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर केतु दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

लाल रंग के वस्त्र पहनने पर आप केतु को शांन्त कर सकते है । आप काले रंग का वस्त्र भी पहन सकते है । मंगलवार में आपको लाल रेग का वस्त्र पहनना चाहिए । पूजा करते समय काला और लाल रंग का वस्त्र पहनना उचित है ।

देवता भजन

केतु दाश के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए गणेश भगवान का पूजा करना चाहिए । आपने जन्म नक्षत्र में गणेश होम करना, वृत लेकर पूर्ण चन्द्र (चतुरती) के चार दिन बाद गणेश मंदिर में दर्शन, गणेश भगवान का स्तुतिगीत करना आदि से केतु दाश के हानिकारक प्रभावों को कम कर सकते है । कुछ ज्योतिषियाँ चामुण्डी देवी की पूजा करने के लिए सलाह देते है । जिनका केतू ओज राशी में है उनको गणेश भगवान का और जिनका केतु युगम्म राशी में उनको चामुण्डी देवी की पूजा करना चाहिए ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्यंदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद चन्द्र की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु
नारायणो ही लोकानाम् सृष्टिस्थित्यान्तकारकः
शिखिनोनिष्टसंभुतम् दोषजातम् निरस्यतु

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास

रखना चाहिए । क्योंकि केतु के लिए कोई शासन करने वाला दिवस नहीं है अपने जन्म नक्षत्र के दिवस उपवास रखकर केतु पूजा करना चाहिए । आश्लेषा, मगह और मूल नक्षत्र के दिन में भी आप उपवास रख सकते है।

उपवास के समय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
केतु को शान्त करने के लिए आप बकरी, आयुध, हरितमणि. लाल था काला रेशम आदि दान कर सकते है । सोना, चाँदीया पंच लोहो से बना मूर्ति दान देना लाभदायक है ।

पूजा

केतु को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है ।केतु पूजा के लिए लाल और काले फूलों का उपयोग किया जाता है । जन्म नक्षत्र के दिवस पर या केतु दाश के शुरुआत में आप केतु पूजा कर सकते है । दरभा धास केतु को दान देना वाला मुख्य अंश है ।निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए ।

मन्त्रों का आलापन

केत का मंत्र आलापन
जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा केतु का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ऊँ चित्रगुप्ताय विदमेह
चन्द्रउच्चाय धीमहि
तन : केतु प्रचोदयात्

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्वि प्राप्त होगा ।

केतु को प्रसन्न करने के लिए केतु के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए । मन्त्र इस प्रकार है

ऊँ केतवे नम :
ऊँ स्तूलशिरसे नम :
ऊँ शीरो मात्राय नम :
ऊँ द्वजकृतये नम :
ऊँ सिंहिकासुरिगर्भसम्भवाय नम :
ऊँ महाभीतिकराय नम :
ऊँ चित्रवर्णाय नम :
ऊँ श्री पिंगल्लाक्षाय नम :

ऊँ भुल्लद्रुम्सकशय नम :
ऊँ तीक्ष्णदंष्ट्राय नम :
ऊँ महारागाय नम :
ऊँ रक्तनेत्राय नम :

अंगुलिक यंन्त्र

अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है । केतु को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

इस आविष्कार को विशुद्व मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 21-3-2038 तक आचारण करना चाहिए ।

नाम : **Prasad** (पुरुष)
जन्म राशी : **तुला**
जन्म नक्षत्र : **स्वाति**

गृहस्थिती : 20-फेब्रुवरी- 2021
अयनांश : चित्रपक्ष

वेधफल इस समय के ग्रहों की स्थिति और जन्मपत्रिका में ग्रहों की स्थिति पर तुलना करके प्रक्षेपित किये गये हैं। ज्योतिष शास्त्र में सूर्य, बृहस्पति और शनि की गतियों की बड़ी प्रधानता होती है। हमारे जीवन में कभी इनका प्रभाव प्रतिकूल, कभी गुणदोष विहीन और कभी कभी अनुकूल भी होता है। यहाँ पर निकट भविष्य का फल बताया जाता है।

सूर्य का गोचर फल।

सूर्य एक राशि में एक महीने तक एक भाव का स्थान गृहण करता है।

∇ (11-फेब्रुवरी-2021 >> 13-मार्च-2021)

इस समय सूर्य पंचम भाव का सक्रमण करेगा

सजगता से न रहे तो दुःख का अनुभव होगा। लापरवाह रहने से अपमानित होना पड़ेगा। धन हानि की संभावना है। सावधान रहें। दरिद्रता का अनुभव होगा। स्वास्थ्य में कमज़ोरी और रोग ग्रस्त रहना पड़ेगा। बाद में पछताना पड़ेगा। उदर विकार, लेखन कार्य में बाधा और प्रतियोगिता में असफलता आदि फलों से बचकर रहने का प्रयत्न होना चाहिए।

∇ (13-मार्च-2021 >> 12-अप्रेल-2021)

इस समय सूर्य छठ्ठा भाव का सक्रमण करेगा

आपका यह अच्छा समय है। विरोधियों पर विजय प्राप्त होगा। सुखमय जीवन रहेगा और सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगा। समस्या से मुक्त रहेंगे। शाँति प्रदान होगी। कार्यक्षेत्र में सफलता के साथ कीर्ति प्राप्त होगा। रोग-रिपुओं पर विजय प्राप्त होगा।

∇ (12-अप्रेल-2021 >> 12-मे-2021)

इस समय सूर्य सातवँ भाव का सक्रमण करेगा

यात्राएँ और किसी तरह का अचानक परिवर्तन संभव है। आर्थिक कठिनाईयाँ होंगी। शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा। कुछ न कुछ स्वास्थ्य में गड़बड़ी होता रहेगा। आराम और मनोरंजन में समय लगाना अच्छा होगा। नये व्यवसाय की योजना कठिनता से सफल ही होगा।

गुरु का गोचर फल।

बृहस्पति एक राशि में करीब एक साल तक रहता है। यह एक प्रधान ग्रह है और बहुत से फल इसके आधार पर बताये जाते हैं।

∇ (21-नवेम्बर-2020 >> 6-अप्रेल-2021)

इस समय गुरु चौथा भाव का सक्रमण करेगा

आपको अपने संबन्धियों की समस्या और शारीरिक स्वास्थ्य की चिंता सतायेगा। संबन्धी लोग अपनी समस्याओं को लेकर आपको तकलीफ़ देंगे। आर्थिक दशा इस समय अच्छी न होने से कठिनाई का सामना करना होगा। अपनी स्वयं की कठिनाइयों के कारण दूसरों को सहारा देना असंभव होगा। अचल संपत्ति विषयक विवाद हो सकता है। सतर्क रहें।

∇ (7-अप्रेल-2021 >> 14-सितंम्बर-2021)

इस समय गुरु पंचम भाव का सक्रमण करेगा

बृहस्पति का श्रेष्ठ प्रभाव आप पर होने से आपका मान्यता बढ़ेगा और पदोन्नति भी प्राप्त होगा। निवास स्थान बच्चों के मधुर किल्लोल से गूँज उठेगा। धन और शान्ति दोनों प्राप्त होंगे। घर के निर्माण का या दूसरे देश में जाने का अच्छा समय है। मानसिक स्वस्थता प्राप्त होगा। सिफ़ारिशों के माध्यम से मुलाकात के लिए धैर्य के साथ चलें। सफलता प्राप्त होगा। नए कपड़े या आभूषण मिलना संभव हैं। लेखन और प्रकाशन संबन्धी काम सफल होंगे।

शनि का गोचर फल।

शनिचर सामान्यतः दुःख देनेवाला ग्रह है और उसका प्रभाव दुःख उत्पन्न करता रहता है। पर कुछ स्थानों में वह खूब लाभदायक फल भी देता है। शनिचर एक राशि से दूसरी राशि में ढाई वर्ष में पहुँचता है।

∇ (25-जानुवरी-2020 >> 29-अप्रेल-2022)

इस समय शनि चौथा भाव का सक्रमण करेगा

शारीरिक अस्वास्थ्य और मानसिक विषमताएँ आता रहेगा। आप डर और शंका से अधिक जटिल बनते जायेंगे। हमेशा आत्मविश्वासी एंव शुभचिन्तक रहने की कोशिश कीजिए। इस समय आपको कई दूर की यात्राएँ करना पडेगा और घर से दूर रहना पड़ेगा। कंटकशनि के इस काल में अपने दोस्तों और स्वजनों से संबन्ध बिगड़ न जाये उसका ध्यान रखें।

∇ (30-अप्रेल-2022 >> 12-जूलाई-2022)

इस समय शनि पंचम भाव का सक्रमण करेगा

घर के बच्चों से कई प्रश्न उठेंगे। अलग अलग रहकर दुःखी हो जाएँगे। आप खुश रहिए कि शनिचर आपका अनुकूल होनेवाला है। जीवन सुखी बनेगा और धन प्राप्ति होगी। निष्ठापूर्ण रहकर कार्य करने से लाभ होगा।

उधोग या पेश के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दसवी अधिपति, दसवी भाव और लग्न में उपस्थित शुभ गृह, लग्न और दसवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय उधोग के लिए अनुकूल है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शनि	बुध	24-03-1998	01-12-2000	अनुकूल
शनि	केतु	01-12-2000	10-01-2002	अनुकूल
शनि	शुक्र	10-01-2002	12-03-2005	उचित
शनि	रवि	12-03-2005	22-02-2006	अनुकूल
शनि	चन्द्र	22-02-2006	23-09-2007	अनुकूल
शनि	मंगल	23-09-2007	01-11-2008	अनुकूल
शनि	राहु	01-11-2008	08-09-2011	अनुकूल
शनि	गुरु	08-09-2011	21-03-2014	अनुकूल
बुध	शुक्र	14-08-2017	14-06-2020	अनुकूल
बुध	शनि	11-07-2028	21-03-2031	अनुकूल
केतु	गुरु	09-03-2035	13-02-2036	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल करीयर योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
09-09-1998	12-01-1999	अनुकूल
26-05-1999	02-06-2000	अनुकूल
17-06-2001	05-07-2002	अनुकूल
31-07-2003	28-08-2004	अनुकूल
29-10-2006	22-11-2007	अनुकूल
02-05-2009	30-07-2009	अनुकूल
21-12-2009	02-05-2010	अनुकूल
02-11-2010	06-12-2010	अनुकूल
09-05-2011	17-05-2012	अनुकूल
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
12-10-2018	29-03-2019	अनुकूल
24-04-2019	05-11-2019	अनुकूल
07-04-2021	14-09-2021	अनुकूल
22-11-2021	13-04-2022	अनुकूल
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल

27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
26-01-2030	01-05-2030	अनुकूल
24-09-2030	17-02-2031	अनुकूल
15-06-2031	15-10-2031	अनुकूल
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल

व्यापार के लिए अनुकूल समय

दूसरा, नौवाँ, दसवी और ग्यारहवी अधिपति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि , और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय व्यापार के लिए अनुकूल दिखाई पड़ता है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
गुरु	चन्द्र	21-07-1990	20-11-1991	अनुकूल
गुरु	मंगल	20-11-1991	26-10-1992	अनुकूल
गुरु	राहु	26-10-1992	21-03-1995	अनुकूल
शनि	बुध	24-03-1998	01-12-2000	उचित
शनि	केतु	01-12-2000	10-01-2002	अनुकूल
शनि	शुक्र	10-01-2002	12-03-2005	उचित
शनि	रवि	12-03-2005	22-02-2006	अनुकूल
शनि	चन्द्र	22-02-2006	23-09-2007	अनुकूल
शनि	मंगल	23-09-2007	01-11-2008	अनुकूल
शनि	राहु	01-11-2008	08-09-2011	अनुकूल
शनि	गुरु	08-09-2011	21-03-2014	उचित
बुध	केतु	17-08-2016	14-08-2017	अनुकूल
बुध	शुक्र	14-08-2017	14-06-2020	उचित
बुध	रवि	14-06-2020	20-04-2021	अनुकूल
बुध	चन्द्र	20-04-2021	20-09-2022	अनुकूल
बुध	मंगल	20-09-2022	17-09-2023	अनुकूल
बुध	राहु	17-09-2023	05-04-2026	अनुकूल
बुध	गुरु	05-04-2026	11-07-2028	उचित
बुध	शनि	11-07-2028	21-03-2031	उचित
केतु	शुक्र	18-08-2031	17-10-2032	अनुकूल
केतु	गुरु	09-03-2035	13-02-2036	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल व्यवसाय योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
14-08-1991	11-09-1992	अनुकूल
10-11-1994	06-12-1995	अनुकूल
08-01-1998	25-05-1998	अनुकूल

09-09-1998	12-01-1999	अनुकूल
26-05-1999	02-06-2000	अनुकूल
17-06-2001	05-07-2002	अनुकूल
31-07-2003	28-08-2004	अनुकूल
29-10-2006	22-11-2007	अनुकूल
02-05-2009	30-07-2009	अनुकूल
21-12-2009	02-05-2010	अनुकूल
02-11-2010	06-12-2010	अनुकूल
09-05-2011	17-05-2012	अनुकूल
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
12-10-2018	29-03-2019	अनुकूल
24-04-2019	05-11-2019	अनुकूल
07-04-2021	14-09-2021	अनुकूल
22-11-2021	13-04-2022	अनुकूल
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
26-01-2030	01-05-2030	अनुकूल
24-09-2030	17-02-2031	अनुकूल
15-06-2031	15-10-2031	अनुकूल
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल

गृह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथा अधिपति, शुभ गृह जिसका दृष्टि चौथा भाव और चौथा अधिपति पर है, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय गृह निर्माण के लिए अनुकूल दिखाई पजता है ।

१५ उम्रे से लेकर ८० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शनि	रवि	12-03-2005	22-02-2006	अनुकूल
बुध	रवि	14-06-2020	20-04-2021	अनुकूल
केतु	गुरु	09-03-2035	13-02-2036	अनुकूल
शुक्र	रवि	21-07-2041	21-07-2042	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल घर निर्माण योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
29-10-2006	22-11-2007	अनुकूल

02-05-2009	30-07-2009	अनुकूल
21-12-2009	02-05-2010	अनुकूल
02-11-2010	06-12-2010	अनुकूल
09-05-2011	17-05-2012	अनुकूल
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
12-10-2018	29-03-2019	अनुकूल
24-04-2019	05-11-2019	अनुकूल
07-04-2021	14-09-2021	अनुकूल
22-11-2021	13-04-2022	अनुकूल
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
26-01-2030	01-05-2030	अनुकूल
24-09-2030	17-02-2031	अनुकूल
15-06-2031	15-10-2031	अनुकूल
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
07-04-2035	15-04-2036	अनुकूल
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल
07-04-2040	29-06-2040	अनुकूल

अष्टकवर्ग

अष्टकवर्गा पध्दति भारतीय ज्योतिष का भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से सम्बधित अंको के प्रयोग का उपयोग करता है । अष्टकवर्गा का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण । यह राहु और केतु का अवरोद करके, लग्न को मिलाकर गृहों को अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है । गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गय है । एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे सम्बधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है । हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिया जाता है । गृहों का ०-८ अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा ।

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	4	2	2	3	2	4	1	18
वृषभ	3	4	6	5	4*	6	3	31
मिथुन	2	3	4	3	4	7	2	25
कर्क	6	5	3	3	3	0	3*	23
सिंह	3	6	6	3	4	4	5	31
कन्या	5	2	2	7	0	6	4	26
तुला	6*	4	5	5	2	5	3	30
वृशचिक	4	4	4	5	4	7	4	32
धनु	4	5	4	4	5	4	5	31
मकर	3	3	7*	6*	2	3	1	25
कुंम्भ	3	4*	5	3	4	6	4	29
मीन	6	6	6	5	5	4*	4	36
	49	48	54	52	39	56	39	337

* - गृहों का स्थान.
लग्न वृषभ में है ।

चन्द्र का अष्टकवर्गा

चन्द्र के अष्टकवर्गा में छः बिन्धु है जो आपको व्यक्त और संतुलित मन के अमूल्य वरदान से अनुग्रहित होगा । आपके मन की स्थिरता और शुद्व विचार उच्च आदर्श से शिक्षित करेगा । लोग आपके उपदेश और बुद्वि प्राप्त करने के लिए समीप आएगो और आपके निर्देशों से लाभ पाएगों ।

सूर्य का अष्टकवर्गा

क्योंकि आपने अपने लाभो को मज़बूत करने के लिए निशिचय किया है ऐसा भी परिस्थिति होगा जब यह सब नष्ट हो जाएगा । सूर्य के अष्टकवर्ग में चार बिन्धु है जो कुटिल सम्पन्ति को सूचित करता है । लेकिन आप अन्य क्षेत्रों में संतोष से अनुग्रहित होगा ।

बुध गृह का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली में बुध अष्टकवर्ग सात बिन्धुओं के उपस्थिति से चमत्कार है । यह अनोक उपस्थिति आपको समृद्वि, खुशी और लोगें के बीच आदर प्राप्त करने के लिए उचित होगा ।

शुक्र का अष्टकवर्गा

आपमें ऐसा कुछ है जो विविध प्रकार के अद्भुत लोगों के संयोग का आकर्षित करता है । वह तत्व आपके जन्मकुण्डली के शुक्र अष्टकवर्गा में उपस्थित छः बिन्धुओं के कारण है । अपने आकर्षण को सही रुप से सभाँलने पर यह आपके लिए उचित और अनुकूल होगा ।

मंगल गृह का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के मंगल अष्टकवर्ग में उपस्थित चार बिन्धु आपको भाग्यवान बनाएगो । यह अवस्थिति गृहों के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए ओर सहायक होगा और आपको तुल्य रुप से अच्छा और बुरा भाग्य प्रधान करेगा । आपको अत्यधिक आनन्द लेने का अवसर प्राप्त नहीं होगा न हि आपको दुःख के गहराई में डूबना पड़ेगा ।

गुरु का अष्टकवर्गा

किसी कारण से आपके जीवन का हर नीचाई एक उचाई से बराबर हो जाएगा । आपके जन्मकुण्डली में उपस्थित गुरु अष्टकवर्ग के चार बिन्धुओं से प्रभावित होगा । यह एक वरदान है क्योंकि जीवन के परिस्थितियों में होने वाला धटाव-बढ़ाव में मानासिक शान्ति को उत्पन्न करेगा ।

शनि गृह का अष्टकवर्गा

रिशतेदारो से मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा । शनि के अष्टकवर्गा में तीन बिन्धु है जो पारिवारिक विस्वरता, अस्वस्थता और सन्तानों के पीडा का अनुभव आदि को सुचित करता है । आपको वित्तसम्बधी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा । खर्च को कम करने से धन सम्बघी मुसीबतों को कम कर सकते है ।

सर्वअष्टकवर्गा भविष्यवाणी

आपके जन्मकुण्डली ग्यारहवी भाव को दसवी भाव से ज्यादा बिन्धु है, लेकिन बारहवी भाव को ग्यारहवी भाव से कम बिन्धु है और उदीयमान में उपस्थित बिन्धु ग्यारहवी से भी महत्व है । अगर आप चाहे तो भी सम्पत्ति और प्रसिद्वि से दूर नहीं भाग सकते जो किसी ओर के ऊपर धटित है जिनके गृहों का प्रभाव आपके जैसे हो । आपका समृद्वि और प्रसिद्वि जीवन में खुशी के लिए रुकावट नहीं होगा । जरुर ही आपका एक अनुग्रहित जीवन होगा ।

आपके जन्मकुण्डली में सबसे अधिक बिन्धु वृशचिक राशी से कुंभ राशी तक है । प्रांरभिक जीवन में जो कुछ हुआ हो उसको ध्यान में रखे बिना बुढ़ापे में आपको अनेक पुरस्कार हासिल होगा गृहों का षडयन्त्र आपको आर्थिक और स्वास्थ्य खिचाव से मोचित करता है और सेवा निवृत्ति के बाद शन्तिपूर्ण जीवन प्रदान करेगा ।

छठे, और ग्यारहवी भाव में तीस से ज्यादा बिन्धु है । चालिस उम्र के बाद आपके जीवन का मार्गशीला होगा । आपके आकर्षिक व्यक्तिगत दूसरे लोगों को आपके ओर खीच लेगा और यह आपके व्यक्तिगत लक्ष्यों के लिए सहायक होगा । सम्पत्ति और भाग्य आपके ऊपर उदारता से भररोगो ।

गुरु शुक्र,बुध द्वारा धारण किए राशीी में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा । आपका शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगा और आपको ऊँचेपढ़ाई के लिए स्थान प्राप्त होगा । आपको उधोग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्वि की ओर

ले जाएगा । व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा । आपके सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा । यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा ।

आपके लिए यह विशिष्ट समय ३६ और २५ उम्र में होगा ।

With best wishes : Jathakam.org
Variethu Central Plaza, Nangiarkulangara, Haripad, Alappuzha, Kerala 690513

[Ref:14.0 S Hin-015-7294-E39A-5EF1]

Note: This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.